viuh ckr

phu ds u, urkvksa ls frCcr leFkZd vk'kkfUor

इसी १० मार्च २०१३ को ५४वें तिब्बती जनक्रांति दिवस पर आयोजित विषाल रैली ने दिखा दिया कि भरतीय जनता तिब्बती आंदोलन के साथ पूरी तरह एकजुट है। नई दिल्ली के जंतर-मंतर पर आयोजित रैली को संबोधित करने वाले तिब्बती नेता तिब्बत के लिए ''वास्तविक स्वायत्तता'' की मांग कर रहे थे। तिब्बत की निर्वासित सरकार के प्रधानमंत्री डॉ. लोबजंग संगे के विषेश संदेष में भी तिब्बत के लिए केवल ''वास्तविक स्वायत्तता'' की मांग की गई थी। निर्वासित तिब्बती सरकार इसे ''मध्यम मार्ग'' कहती है। चीन की संप्रभुता का सम्मान करते हुए तिब्बत को कई मामलों में पूर्ण आजादी मिले। तिब्बती नेता चीन के अवैध आधिपत्य से तिब्बत को पूरी तरह आजाद कराने की मांग छोड़ चुके हैं। उनका मत है कि चीन की सरकार तिब्बत में व्यापक पैमाने पर प्राकृतिक संसाधनों का विनाष कर रही है। चीन वहाँ मानवाधिकारों एवं लोकतांत्रिक मुल्यों का गला घोंट रहा है। तिब्बत की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और ऐतिहासिक पहचान मिटाई जा रही है। शड्यंत्रपूर्वक तिब्बत में तिब्बतियों को अल्पसंख्यक बनाया जा रहा है। तिब्बती समाज में सामाजिक-आर्थिक असंतुलन और असमानता इसी कुटिल चीनी नीति के परिणाम हैं। ऐसी विकट परिस्थिति में तिब्बत की आजादी से भी अधिक महत्वपूर्ण है तिब्बत तथा तिब्बती पहचान का संरक्षण। इसी उद्देष्य से तिब्बत की निर्वासित सरकार तिब्बत के लिए केवल ''वास्तविक स्वायत्तता'' की मांग कर रही है।

निर्वासित तिब्बती सरकार के प्रतिनिधियों से भिन्न भारतीय वक्ता तिब्बत के लिए चीन से पूर्ण आजादी की मांग कर रहे थे। वे पहले की तरह तिब्बत को भारत एवं चीन के बीच मध्स्थ राज्य (बफर स्टेट) के रूप में देखना चाहते हैं। ऐसा होने पर भारत की जम्मू-कष्मीर से लेकर अरूणाचल प्रदेष तक की सीमा की सुरक्षा का व्यय काफी कम हो जाएगा। अभी सीमा पर चीन की उपस्थिति के कारण भारत को प्रतिदिन अपनी सुरक्षा के लिए करोड़ों रूपये खर्च करने पड़ रहे हैं। तिब्बत पर चीन के अवैध नियन्त्रण के कारण ही ''भारत-तिब्बत सीमा'' की जगह ''भारत चीन सीमा'' का जन्म हुआ है। ऐतिहासिक रूप से भारत और तिब्बत पड़ोसी राज्य रहे हैं। भारत और चीन पड़ोसी राज्य पहले कभी नहीं रहे। चीन द्वारा तिब्बत में भारत विरोधी गतिविधियों को साजिषपूर्वक बढ़ावा दिया जा रहा है। तिब्बत पर अपने अवैध कब्जे के बलबूते चीन की सरकार भारत को चारों ओर घेरने, कमजोर करने तथा अपमानित करने की नीति पर चल पड़ी है। चीन द्वारा तिब्बत में जारी प्राकृतिक संसाधनों के विनाष से भारत का पर्यावरण बर्बाद हो रहा है। चीन द्वारा की जा रही तस्करी के कारण भारत की सामाजिक-आर्थिक स्थिति चिंताजनक हो गई है। इसलिए चीन से भारत की सुरक्षा का एकमात्र उपाय है तिब्बत की आजादी। स्वतंत्र तिब्बत-सुरक्षित भारत।

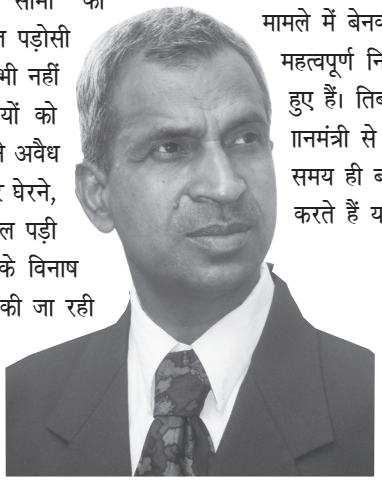

भारत के लगभग सभी दलों के प्रमुख नेता तथा निर्वाचित जन प्रतिनिधि भारत के हित में तिब्बत की पूर्ण आजादी के समर्थक हैं। तिब्बत समर्थक भारतीय संगठनों की आपसी एकजुटता इसी तथ्य का प्रमाण है। तिब्बत की पूर्ण आजादी की आवाज ब्रुषेल्स में आयोजित तिब्बती एकजुटता रैली में भी प्रभावी ढंग से सामने आई। यूरोप के लगभग सभी देषों के जन प्रतिनिधि तथा सांसद चीन से तिब्बत की मुक्ति हेतु संघर्श की अपील कर रहे थे। तिब्बत की निर्वासित संसद के स्पीकर पेंपा छेरिंग तथा पूर्व प्रधानमंत्री कीर्ति रिंपोछे की उपस्थिति में ब्रुषेल्स के आयोजन में चीन के अलोकतांत्रिक एवं गैर कानूनी व्यवहार की कटु आलोचना की गई। इस प्रकार भारतीय जनता और यूरोप की जनता का दृश्टिकोण तिब्बत के मामले में एक समान है। विष्व के अन्य देषों में भी ऐसा ही दृश्टिकोण है।

चीन के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति षी जिंपिंग तथा प्रधानमंत्री जी षियांग को तिब्बत के मामले में अंतर्राश्ट्रीय जनमत का आदर करते हुए विष्व षांति के लिए समस्या को षीघ्र हल करना होगा। उन्हें अपने पूर्ववर्ती राजनेताओं से भि.न्न रूख अपनाते हुए तिब्बती आंदोलनकारियों, तिब्बत की निर्वासित सरकार तथा परमपावन दलाई लामा जी के साथ सार्थक संवाद कायम करना चाहिए। संवाद की कमी तथा चीन सरकार के क्रूरतापूर्ण व्यवहार के कारण ही अब भी तिब्बत में आत्मदाह की घटनायें जारी हैं। कुछ महीनों में सौ से अधिक षांतिप्रिय तथा अहिंसक तिब्बती आंदोलनकारी स्वयं को आग के हवाले कर चुके हैं। वे चाहते थे तिब्बत में परमापावन दलाईलामा की ससम्मान वापसी। तिब्बत की चीन के नियंत्रण से आजादी। वे चाहते थे कि संयुक्त राश्ट्र संघ समेत सभी महत्वपूर्ण संगठन चीन पर दबाव बनायें और तिब्बत में चीन के निरंकुष व्यवहार पर रोक लगायें।

तिब्बत में चीन की क्रूरता से स्वयं को बचाने के लिए आंदोलनकारी अपनी ही देह में अपने ही हाथों आग लगा रहे हैं। उनके इस बलिदान की उपेक्षा चीन सरकार के लिए महंगी पड़ेगी। विष्व स्तर पर चीन की सरकार तिब्बत के मामले में बेनकाब हो चुकी है। अनेक राश्ट्रीय-अंतर्राश्ट्रीय संगठन तथा महत्वपूर्ण निर्वाचित जनप्रतिनिधि आत्मदाह की घटनाओं से विचलित हुए हैं। तिब्बतियों और उनके समर्थकों को चीन के नए राश्ट्रपति-प्रधानमंत्री से तिब्बत समस्या के षीघ्र समाधान की उम्मीद है। अब तो समय ही बताएगा कि वे तिब्बत के मामले में विष्वजनमत का आदर करते हैं या अपमान?

ik0 ';keukFk feJk
पत्रकार एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
E-mail :- shyamnathji@gmail.com

तिब्बत में ११४ वें आत्मदाह की घटना में भिक्षु की मौत

(तिब्बतनरीव्यू डॉट नेट, २६ मार्च)

बढ़ते दंडात्मक चीनी दमन से तिब्बत में आत्मदाह का दुःखद चक्र बढ़ता जा रहा है और इस तरह की नवीनतम घटना में २६ मार्च को गांसू प्रांत के कानल्हो काउंटी में स्थित लुंछू में एक युवा भिक्षु की मौत हो गई। पिछले कुछ दिनों में वह तिब्बत में आत्मदाह कर शहीद हो जाने वाले तीसरे व्यक्ति हैं और इस तरह से वर्ष २००६ के बाद अब तक आत्मदाह करने वालों की संख्या ११४ पहुंच गई है।

रेडियो फ्री एशिया की २८ मार्च की रिपोर्ट के अनुसार २८ वर्षीय कोनछोग तेनजिन ने अपने मोरी मठ के करीब स्थित एक बड़े चौरोहे पर सुबह करीब ७ बजे खुद को आग लगा ली। सूत्रों से मिली खबरों के मुताबिक रेडियो ने बताया कि उन्होंने तिब्बत में चीन की निर्दयी नीतियों के विरोध स्वरूप अपनी जान कुर्बान कर दी है। घटना के तत्काल बाद स्थायी तिब्बती उनके शव को प्रार्थना सभा के लिए मठ के भीतर लेकर गए और देर रात में उनका अंतिम संस्कार कर दिया।

इस घटना के बाद मोरी मठ सहित आसपास के सभी कस्बों में बड़ी संख्या में चीनी सुरक्षा बल तैनात कर दिए गए और स्थानीय तिब्बतियों की आवाजाही पर कई तरह के प्रतिबंध लगा दिए गए।

भारत अब भी शिक्षक है : परमपावन

(तिब्बत डॉट नेट, ८ मार्च)

कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता और जनसंचार विश्वविद्यालय (केटीयूजेएमसी) के पहले दीक्षांत समारोह को सम्बोधित करते हुए परमपावन दलाई लामा ने कहा कि भारत ज्ञान भूमि है, जहां प्राचीन काल में सभ्यता का विकास हुआ, जब इसे आर्यभूमि कहा जाता था। सेंट्रल क्रॉनिकल न्यूज एजेंसी के अनुसार उन्होंने कहा कि आध ुनिक शिक्षा जरूरी है, लेकिन हमें प्राचीन भ. ारतीय शिक्षा पद्धति को नहीं भूलना चाहिए, क्योंकि यह हमें भारतीय संस्कृति और परंपरा की गहरी समझ देता है। उन्होंने कहा कि प्रा. चीन शिक्षा पद्धति आज के जीवन में प्रासंगिक है, जबकि आधुनिक शिक्षा भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति के उत्कर्ष को छू नहीं पाई है। उन्होंने कहा कि भारत अपने समृद्ध दार्शनिक चिंतन और सृजन के कारण महान हुआ है।

उन्होंने भारत के बहुलवाद की सराहना की, जहां जैन, सिक्ख, बौद्ध, इसाई, इस्लाम, आदि अलग धार्मिक परम्परा के लोग साथ रहते हैं। उन्होंने कहा, ''हमें अपनी परम्परा और सांस्कृतिक मूल्यों से ताकत हासिल करनी चाहिए।''

हम भारत को एक गुरु की तरह मानते हैं और इसकी संस्कृति और परम्परा के कारण इसके अनुयायी हैं।

दलाई लामा ने छात्रों से कहा, ''हमें नागार्जुन जैसे लोगों से प्रेरणा लेनी चाहिए, जो इस देश में रहते थे। मैं इस देश का बहुत सम्मान करता हूं।''

उन्होंने कहा कि सिरपुर में बौद्ध, जैन, शैव और वैष्णव संस्कृति के ऐतिहासिक स्थलों में जाकर उन्हें शांति और संतोष मिला। सिरपुर एक गांव है, जहां वे सुबह गए थे। उन्होंने कहा कि वे सिरपुर दोबारा जाना चाहेंगे। सेंट्रल क्रॉनिकल के मुताबिक उन्होंने कहा कि वे जब अगली बार सिरपुर जाएंगे, तो वहां ध्यान में बैठना चाहेंगे।

इस अवसर पर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री रमन सिंह ने कहा कि यह छत्तीसगढ़ के लोगों और खासकर केटीयूजेएमसी के छात्रों के लिए गौरव की बात है कि विश्व शांति के अग्रदूत दलाई लामा मुख्य अतिथि के रूप में इस आयोजन में पहुंचे हैं।

छत्तीसगढ़ के लोग दलाई लामा के इस आयोजन को ऐतिहासिक घटना के रूप में याद रखेंगे।

उन्होंने कहा कि यह छत्तीसगढ़ के लिए खुशी और गौरव की बात है कि सिरपुर की शांति दलाई लामा को इतनी पसंद आई कि उन्होंने अगली बार आने पर वहां एक घंटे के लिए ध्यान में बैठने का फैसला किया है।

सेंट्रल क्रॉनिकल के मुताबिक मुख्यमंत्री ने कहा कि दलाई लामा का ध्यान वर्षों पहले नागार्जुन द्वारा इस स्थान में आने के बाद दूसरी बड़ी घटना के तौर पर याद किया जाएगा। उन्होंने कहा कि दलाई लामा ने तिब्बत के लिए महात्मा गांधी का रास्ता अपनाया है और पूरी दुनिया उनका घर हो गई है।

यूरोपीय संसद ने चीन के नए नेतृत्व को तिब्बत में रा. जनीतिक सुधार अपील की

(तिब्बतनरिव्यू डॉट नेट, १६ मार्च, २०१३)

चीन के नए पार्टी महासचिव शी जिनपिंग ने जहां १४ मार्च को देश के राष्ट्रपति पद की बागडोर सम्भाली, वहीं यूरोपीय संसद ने एक प्रस्ताव पारित कर एक पार्टी शासित देश से राजनीतिक सुधार करने की अपील की है और तिब्बत की बदतर स्थिति पर चिंता जताई है।

प्रस्ताव में चीन से अनुरोध किया गया कि वह आर्थिक विकास की तरह राजनीतिक सुधार भी करे। प्रस्ताव में चीन के पड़ोसी देश जापान और ताइवान के साथ तनाव पर भी चिंता जताई गई और मानवाधिकार मामलों को भी उठाया गया।

तिब्बत मामले में प्रस्ताव में तिब्बतियों द्वारा किये जाने वाले आत्मदाह का जिक्र था। इसमें कहा गया, ''ताकत के बल पर स्वायत्त प्रदेश तिब्. बत में शांति बहाल नहीं की जा सकती है।''

प्रस्ताव में यह भी कहा गया कि यूरोपीय संघ और चीन के बीच यूरोप की २०२० रणनीति और चीन की १२वीं पंच वर्षीय योजना के जरिए व्यावहारिक सहयोग स्थापित किया जा सकता है। इसमें चीन के नए नेतृत्व से यह सुनिश्चित करने के लिए कहा गया कि चीन को आर्थिक मोर्चे पर मिली सफलता पार्टी के धनाढ्य नेताओं के शासन के कारण महत्वहीन नहीं होगी।

fcVsu ds 150 lkalnksa ls iz/kkuea=h ds lkeus frCcr ely k mBkus dk dgk x;k

रविवार, १० मार्च को लंदन में तिब्बत फ्रीडम मार्च के अवसर पर ब्रिटेन स्थित तिब्बती संगठनों के प्रतिनिधि वहां के प्रधानमंत्री को एक पत्र सौंपते हुए। फोटोः तिब्बत सोसाइटी

(फायूल डॉट कॉम, १६ मार्च, २०१३)

तिब्बती और उनके समर्थकों ने ब्रिटेन की संसद और स्थानीय संसदीय क्षेत्रों में पांचवें वार्षिक तिब्बत जनमत निर्माण दिवस में हिस्सा लिया। करीब ३०० समर्थकों ने या तो आमने-सामने मुलाकात कर या पत्र लिखकर १५० सांसदों से इस बारे में जनमत बनाने की कोशिश की।

इस प्रयास के आयोजकों का कहना है कि इस साल जनमत निमार्ण "सांसदों से यह आह्वान करने के लिए किया गया था कि वे प्रधानमंत्री डेविड कैमरन से तिब्बत पर चिंता जताते हुए एक सार्वजनिक बयान जारी करने के लिए कहें और ब्रिटेन की सरकार से यह आग्रह करें कि वह तिब्बत संकट के हल के लिए अन्य सरकारों के साथ मिलकर काम करे।"

वेस्टमिंस्टर के सेंट्रल लॉबी में करीब ६० तिब्बती और उनके समर्थक अपने सांसदों से मिले और उन्होंने अपनी चिंता जताते हुए तिब्बत पर के लिए कदम उठाने को कहा। आयोजकों का कहना है कि सांसदों की प्रतिक्रिया 'सकारात्मक' थी और ज्यादातर सांसदों ने "सुझाए गए कदमों को उठाने की प्रतिबद्धता दिखाई।"

सांसद इस बात पर सहमत हुए कि हाउस ऑफ कामंस में तिब्बत पर एक बार फिर से बहस होनी चाहिए, यह देखते हुए कि इस पर पिछली बहस दिसंबर २०११ में होनी चाहिए।

उसी दिन तिब्बत पर सर्वदलीय संसदीय समूह के लोग "तिब्बती राष्ट्रीय जनक्रांति की वर्षगांठ मनाने और चीन के ६३ साल के कब्जे के सभी पीड़ितों को याद करने के लिए" वेस्टमिंस्ट एबे पर धरने पर बैठे। स्मारक पर यह धरना दमन, हिंसा और युद्ध के निर्दोष पीड़ितों के लिए था और इसके बाद छोटी सी सर्वदलीय प्रार्थना सभा भी की गई। सांसद फेबियन हैमिल्टन (लैब, लीड्स नॉर्थ ईस्ट और एपीपीजीटी के अध्यक्ष) ने एक संक्षिप्त भाषण में उन लोगों पर खासकर ध्यान दिया जो तिब्बत पर चीनी कब्जे की वजह से मारे गए और तिब्बती जनता की आज़ादी की रक्षा और मानवाधिकारों के लिए जेल में डाले गए हैं।

दिल्ली में तिब्बत के साथ भारतीय एकजुटता रैली

भारतीय संसद के सदस्य और जनता दल (यू) के नेता श्री शरद यादव १० मार्च को नई दिल्ली में तिब्बत पर भारतीय एकजुटता रैली को संबोधित करते हुए। फोटोः आईटीसीओ

बीटीएसएम के संरक्षक श्री इंद्रेश कुमार १० मार्च को नई दिल्ली में तिब्बत पर भारतीय एकजुटता रैली को संबोधित करते हुए। फोटोः आईटीसीओ

तिब्बत डॉट नेट, नई दिल्ली, १२ मार्च, २०१३)

तिब्बती लोग और उनके समर्थकों ने जहां १० मार्च २०१३ को दुनिया भर में तिब्बती राष्ट्रीय जनक्रांति की ५४वीं वर्षगांठ मनाई, वहीं भारत में सभी तिब्बत समर्थक समूहों ने (टीएसजी) तिब्बत के समर्थन में एक राष्ट्रीय जन रैली निकाली और तिब्बत की मौजूदा स्थिति को लेकर चिंता जता. ई। देश भर के विभिन्न तिब्बत समर्थक समूहों के करीब २,००० कार्यकर्ताओं ने नई दिल्ली में जंतर- मंतर पर इस रैली में हिस्सा लिया।

रैली से पहले हिंदू, मुस्लिम और बौद्ध भिक्षुओं ने मिलकर प्रार्थना की और तिब्बत के लिए अपनी जान की कुर्बानी देने वाले सभी तिब्बतियों की याद में एक मिनट की मौन श्रद्धांजलि दी गई। कोर ग्रुप ऑफ तिब्बतन कॉज के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. एन.के. त्रिखा सभी प्रदर्शनकारियों का स्वागत किया और तिब्बत की बिगड़ती हालत पर चिंता जताई। उन्होंने चीन की सरकार को संकेत देते हुए कहा कि भारत के लोग हमेशा तिब्बत के साथ हैं।

इस रैली को कई राजनीतिक दलों के नेताओं ने सम्बोधित किया। जनता दल के अध्यक्ष श्री शरद यादव ने तिब्बती भाइयों और बहनों से आत्मदाह नहीं करने की अपील की। उन्होंने विशेष तौर पर नेपाल की सरकार से अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार बहाल करने और तिब्बती लोगों से सम्मान और सहानुभूति के साथ पेश आने का आग्रह किया।

बीटीएसएम के संरक्षक श्री इंद्रेश कुमार ने अपने सम्बोधन में तिब्बती लोगों की आकांक्षा के साथ वाजिब तरीके से पेश आने का आग्रह किया। इस मौके पर भाजपा, जद यू, समाजवादी पार्टी, लोक जनशक्ति पार्टी, राष्ट्रीय लोक दल, राष्ट्रीय जनता दल जैसी राजनीतिक पार्टियों के नेता और एबीवीपी, युवा मोर्चा और समाजवादी युवजन सभा जैसे छात्र समूहों के युवा नेताओं ने भी रैली को सम्बोधित किया।

यह अखिल भारतीय रैली इस साल दो कारणों से विशेष महत्व की है। आज से १०० साल पहले १९१३ में तिब्बती लोगों ने तिब्बत पर चीन के मांचू शासन की चार साल (१९०९-१९१३) की सत्ता को उखाड़ फेंका था और तिब्बत के शासक और धार्मिक गुरु परमपावन १३वें दलाई लामा ने एक फिर से तिब्बत की एक स्वतंत्र और सम्प्रभु राष्ट्र के रूप में स्थापना की थी। चीन के कब्जे वाले तिब्बत में मानवाधिकार के घोर उल्लंघन के कारण अब तक तिब्बत के १०७ लोगों ने अपने देश पर चीन के साम्राज्यवादी कब्जे के विरोध में आत्मदाह किए हैं।

इस रैली का मकसद पूरी दुनिया और खास कर भारत सरकार और संयुक्त राष्ट्र का ध्यान तिब्बत में मानवाधिकार की मौजूदा स्थिति की ओर खींचना था।

इस रैली का समन्वय कोर ग्रुप फॉर तिब. बतन कॉज (सीजीटीसी) ने किया, जो भारत में सभी टीएसजी का अम्ब्रेला ऑर्गनाइजेशन है। इन संगठनों में शामिल भारत तिब्बत सहयोग मंच (बीटीएसएम), भारत तिब्बत मैत्री संघ (आईटीएफएस), हिमालय परिवार, फ्रेंड्स ऑफ तिब्बत (एफओटी), हिमालय कमिटी फॉर एक्शन ऑन तिब्बत (एचआईएमसीएटी), अंतर्राष्ट्रीय भ. ारत तिब्बत सहयोग समिति, मुस्लिम राष्ट्रीय मंच (एमआरएम), यूथ लिबरेशन फ्रंट ऑफ तिब्बत (वाईएएफटी), लद्दाख बुद्धिस्ट एसोसिएशन, नेशनल कैम्पेन फॉर तिब्बतन सपोर्ट, स्टूडेंट्स फॉर अ फ्री तिब्बत (एसएफटी), आदि। करीब ६०० तिब्बतियों का एक और समूह भी राजघाट पर प्रार्थना कर इस रैली में शामिल हो गया।

ज्ञान, विश और एक अविवसनीय पिता जैसे व्यक्तित्व पर दलाई लामा के विचार

धर्मशाला स्थित अपने आवास पर लंबे समय तक बैठकर दलाई लामा ने तिब्बती भिक्षुओं के आत्मदाह और नए व पुराने चीनी नेताओं के बारे में कठिन सवालों के जवाब दिए।

(फ्रेडरिक कोलर, एलई टेम्प्स/वर्ल्ड चर्च, धर्मशाला २६ मार्च)

धर्मशाला का महान मठ एक सामान्य और आकर्षणविहीन स्थान है, एक अपरिष्कृत कॉन्क्रीट का ढांचा जो जाड़े में इस इलाके में बहने वाले हिमालयी ठंडी हवाओं से तर है।

तिब्बत के मठों से इसमें अंतर बहुत असाधारण है: "दुनिया की छत पर" तिब्बत पठार में हर जगह धर्म ही दिखता है, स्वर्णिम छतों वाले महलों में आला दर्जे की बहुत सी मूर्तियों में।

लेकिन धर्मशाला और तिब्बत में एक और अंतर भी है। चीन जनवादी गणतंत्र की सीमा के भीतर तिब्बत के मंदिरों में डर पसरा हुआ है, जबकि उत्तरी भारत के इस शहर में, जहां तिब्बती आध्यात्मिक नेता का केंद्र है, हर तरफ आज़ादी है।

और इसी तरह १४वें दलाई लामा तेनजिन ग्यात्सो भी पूरी आज़ादी से जी रहे हैं। सुबह करीब ४ बजे जगने के बाद ७७ वर्ष के बौद्ध नेता ने एक गहन इंटरव्यू के लिए ले टेम्प्स

का स्वागत करने से पहले कुछ घंटे ध्यान में लगाए। तिब्बती विरोध प्रदर्शनकारियों, चीन के नए नेता शी जिनपिंग, अपने बूढ़े होते जाने आदि के बारे में दलाई लामा ने बहुत साधारण तरीके से और सीधे जवाब दिए।

ले टेम्प्सः वर्ष २००९ से अब तक १०० से ज्यादा तिब्बतियों ने आत्मदाह कर लिया है, और आपने न तो इन कार्रवाइयों का समर्थन किया है और न ही इनकी आलोचना की है। चीनी कब्जे के विरोध में इस तरह का बवाल होने के बाद तिब्बती आध्यात्मिक नेता तटस्थ कैसे रह सकते हैं?

दलाई लामाः यह संवेदनशील राजनीतिक जटिलताओं के साथ बहुत ही नाजुक मसला है। पहले आत्मदाह के बाद मैंने दुःख जताया था। इसके बाद मैंने उनके वास्तविक उद्देश्य और नतीजे पर नजर डाली-और मैंने तय किया कि इस तरह की कार्रवाई को प्रोत्साहित नहीं करूंगा। मेरी स्थिति अब भी यही है। उन लोगों ने होशो-हवास में आत्मदाह करने का निर्णय लिया है। वे कोई नशे में नहीं थे। उनके यहां कोई पारिवारिक समस्या भी नहीं थे। फिर भी उन्होंने अपना जीवन बलिदान कर देने का निर्णय लिया। तिब्बत में वास्तव में हताशा की स्थिति है। लंबे समय से जारी उत्पीड़न को सहते रहने की जगह उन्होंने अपनी जान दे दी...इसलिए मैं चुप ही रहा।

ले टेम्प्सः क्या ये बलिदान बौद्ध धर्म की शिक्षाओं के विपरीत नहीं हैं, जो करुणा का संदेश देते हैं, यहां तक कि अपने दुश्मनों के लिए भी?

दलाई लामाः हर चीज व्यक्तिगत प्रेरणा पर निर्भर करती है। इसके लिए कोई सामान्य नियम नहीं है। उदाहरण के लिए वियतनाम युद्ध के दौरान बहुत से भिक्षुओं ने खुद को आग लगा लिया। बौद्ध सिद्धांतों के मुताबिक यदि यह धर्म और लोगों के कल्याण के लिए किया जाता है तो इसे पवित्र माना जाता है। लेकिन फिलहाल वहां बहुत ज्यादा गुस्सा, बहुत ज्यादा घृणा है और हालात बुरे हैं। हमें इसे मामला-दर-मामला आधार पर देखना होगा।

ले टेम्प्सः ट्यूनिशिया में एक व्यक्ति के आत्मदाह ने समूचे अरब दुनिया की तकदरी बदल दी। लेकिन अभी तक १०० से ज्यादा तिब्बती आत्मदाह कर चुके हैं, लेकिन कुछ भी हासिल नहीं हुआ है...आपका इस पर क्या कहना है?

दलाई लामाः मुझे इस पर संदेह है कि इस तरह की कार्रवाई से कोई बदलाव आ सकता है। हाल का एक और उदाहरण लीजिएः सीरिया में ७०,००० से ज्यादा लोग मारे गए हैं जिनमें बहुत से निर्दोष बच्चे और महिलाएं हैं। इस पर पूरी दुनिया को चिंता है। लेकिन रूस और चीन में तनाव की वजह से संयुक्त राष्ट्र के हाथ बंधे हुए हैं। यह राजनीतिक मसला है। यही स्थिति तिब्बत की है-चीन अब बहुत ताकतवर हो चुका है और यही समस्या है।

ले टेम्प्सः आप चीनी कम्युनिस्ट नेताओं को अच्छी तरह से जानते हैं। आप माओ-त्से तुंग, चाउ एनलाई और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के मौजूदा महासचिव शी चोंगशुन से मिल चुके हैं।

दलाई लामाः मैं उनसे १९५४ या १९५५ में मिला था। वह काफी दोस्ताना रवैए वाले एक सक्षम व्यक्ति थे। उस समय उन्हें उदार माना जाता था।

ले टेम्प्सः आपने उन्हें एक घड़ी भेंट की थी...

दलाई लामाः जी हां. वर्ष १९७९ में जब वह गुआंगदोंग प्रांत के गवर्नर थे, उन्होंने मेरे एक तथ्यान्वेषी दल का स्वागत किया था और उन्हें घड़ी दिखाते हुए बताया था कि दलाई लामा ने उपहार में दिया था...(हंसते हैं)

ले टेम्प्सः क्या उन्होंने कोई संदेश दिया था?

दलाई लामाः नहीं। लेकिन उन्होंने उम्मीद जताई थी कि मरने से पहले मुझसे एक बार और मिलेंगे।

ले टेम्प्सः उनका तो वर्ष २००२ में निधन हो गया। हो सकता है कि उनके बेटे आपसे मिलें, जिनके हाथ में अब चीन की कमान है...?

दलाई लामाः मैं नहीं जानता। वर्ष १९७९ और १९८० के दशक के शुरुआती वर्षों में देंग जियोपिंग युग की शुरुआत वास्तव में खुले दिमाग वाले लोग थे। वर्ष १९८० में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के तत्कालीन महासचिव हू याओबांग ने ल्हासा का दौरा किया और उन्होंने चीन की पिछली गलतियों के लिए सार्वजनिक तौर पर माफी मांगी। इसके बाद करीब १९८६ में चीन में लोकतांत्रिक आंदोलन शुरू हो गया। इसके बाद हू याओबांग को बर्खास्त कर दिया गया। उनकी जगह झाओ जियांग आए, लेकिन वह कमजोर थे। जिसके बाद कट्टर नेता ली पेंग ने उनकी जगह ली। तब ही टिनामेन चौक नरसंहार की घटना हो गई और चीन ने काफी सख्त राजनीतिक रुख अख्तियार कर लिया, तिब्बत और सीक्यांग प्रांतों के बारे में भी।

ले टेम्प्सः अब ज्यादा से ज्यादा चीनी लोग आपसे मिलने आते हैं...

दलाई लामाः मैं हर हफ्ते चीनी लोगों से मिलता हूं। आज १५ लोग खासकर चीन से आए हैं। कई बार मैं तो एकसाथ सैकड़ों चीनी लोगों के सामने भाषण देता हूं। पिछले साल १,००० से ज्यादा चीनी लोगों के साथ एक बैठक हुई थी। तीन साल पहले आए एक चीनी विश्वविद्यालय के अध्ययन के अनुसार चीन में ३० करोड़ से ज्यादा बौद्ध हैं।

ले टेम्प्सः आपके दर्शन के लिए आए युवा चीनी लोगों से आप क्या कहते हैं?

दलाई लामाः मैं हमेशा उनसे कहता हूंः बौद्ध धर्म सिर्फ विश्वास करने या प्रार्थना करने का ही नहीं है-यह आपके मस्तिष्क को प्रशिक्षण देने वाला है। ज्ञान अनिवार्य है। मैं उनसे कहता हूंः आपको जिन भी किताबों की जरूरत है, सबका अनुवाद किया गया है। इसलिए अध्ययन करें! प्रार्थना करना, चढ़ावा चढ़ाना और अगरबत्तियां जलाना ही काफी नहीं है। आपको ज्ञान की जरूरत है।

ले टेम्प्सः पिछले साल, आपके संसदीय सि. चवालय ने खुलासा किया था कि एक चीनी जासूस आपको जहर देने की कोशिश कर रहा था।

दलाई लामाः हमें ऐसी खुफिया जानकारी मिली थी कि चीनी गुप्तचर एजेंसियों ने एक महिला की सेवा ली है और उसे यह निर्देश दिया है कि वह अपने बालों या स्कार्फ में जहर लगाकर रखे। जब कोई इस तरह के जहर के संपर्क में आता है तो तत्काल कोई असर नहीं होता। लेकिन इसके दो महीने बाद उस व्यक्ति की मौत हो जाती है। इस बीच कालिनबो के तिब्बती मठ से हमें जानकारी मिली कि एक यूरोपीय महिला ने वहां के प्रमुख भिक्षु से मुलाकात करने की इच्छा जताई जो कि मेरी शिक्षा के अनुयायी हैं, महिला ने उन्हें मोमोज दिए। वह उस महिला को नहीं जानते थे, इसलिए उन्हें थोड़ा संदेह हुआ। उन्होंने वह मोमोज दो कुत्तों को खिलाए। इसके ठीक दो महीने बाद उन कुत्तों की मौत हो गई। तिब्बत स्वायत्तशासी क्षेत्र में चीनी अधिकारियों में यह कहावत चल रही है कि यदि आप सांप से छुटकारा पाना चाहते हैं तो आपको उसका सिर काटना होगा।

ले टेम्प्सः करीब दो साल पहले आपने अपने सभी सांसारिक पद त्याग दिए थे। देश के मुखिया के तौर पर आप अपने पिछले दौर को किस तरह से देखते हैं?

दलाई लामाः करीब १९४७-४८ में जब मैंने सांसारिक जिम्मेदारियां नहीं ली थीं, तब ही मुझे ऐसा लगता था कि तिब्बत को काफी पिछड़े तरीके से चलाया जा रहा है-मुख्यतः इसलिए क्योंकि सत्ता कुछ ही लोगों के हाथों में थी। वर्ष १९५१ में आधिकारिक रूप से तिब्बत का शासक बना और वर्ष १९५२ में मैंने एक सुधार ब्यूरो की स्थापना की। उस समय तक चीनी तिब्बत में पहुंच चुके थे और वे इन सबसे खुश नहीं थे-लेकिन हम तिब्बतियों को अपने सुधार कार्यक्रमों पर आगे बढ़ना ज्यादा प्रासंगिक लग रहा था। हालांकि, यह सफल नहीं हो पाया। वर्ष १९५४ में मैं चीन गया। मैं बीजिंग में कुछ महीने रहने के बाद १९५५ में वापस आ गया, वहां मैं कई बार चेयरमैन माओ से मिला। वह एक अद्भुत व्यक्ति थे।

ले टेम्प्सः अद्भुत, कैसे? खुले दिमाग के थे?

दलाई लामाः हमेशा खुले विचारों वाले रहे!

ले टेम्प्सः क्या आप दोनों ने लोकतंत्रीकरण के बारे में बात की?

दलाई लामाः लेकतंत्रीकरण, नहीं, ऐसा तो नहीं हुआ। (हंसते हैं), लेकिन हमने विकास, क्रांति और कई चीजों पर बात की...मैं उनके बेटे जैसा पेश आया और इसके बदले में उन्होंने मेरे साथ एक पिता जैसा व्यवहार किया।

ले टेम्प्सः सच में ?

दलाई लामाः यह सच है। और मुझे लगता है कि वह वास्तव में मुझ पर भरोसा करते थे। पिछली बार जब हम मिले थे तो उन्होंने मुझे बताया थाः "ओह, आप तो बहुत वैज्ञानिक तरीके से सोचते हैं। लेकिन क्या जानते हैं कि धर्म जहर हैं।" उन्होंने मुझसे कभी यह नहीं कहा कि उन्हें मुझ पर भरोसा नहीं है। मैं एक धार्मिक नेता हूं, मै दलाई लामा हूं और वह मुझे बता रहे थे कि धर्म जहर है. ..(हंसते हैं)

लेकिन मैं यह समझ गया था कि चेयरमैन माओ को बौद्ध धर्म की वास्तविक जानकारी नहीं है। एक सच्चे बौद्ध को धर्म का पालन जरूर करना चाहिए। यदि आप बंद आंखों से देखेंगे तो आपको सिर्फ मठ, प्रार्थना, पैसा ही दिखेगाः जो कि शोषण है। चेयरमैन माओ ने शोषण का दृढ़ता से विरोध किया था। उस समय मुझे उनमें पूरा भरोसा था और उन्होंने मुझसे कई वायदे किए थे। मैं वास्तव में सा. `चता था कि मैंने जिन सुधारों को प्रस्तावित किया है उसे चीनी कम्युनिस्टों की मदद से लागू किया जा सकता है और तिब्बत एक दिन आगे बढ़ने में सक्षम होगा।

लेकिन १९५६ में पूर्वी तिब्बत में सशस्त्र संघर्ष शुरू हो गया। वर्ष १९५८ में हालात और बुरे हो गए। आखिरकार मार्च १९५९ में जब सभी उम्मीदें खत्म हो गईं तो मैंने तिब्बत को छोड़ने का निर्णय लिया। इसके बाद १९६० में समूचे तिब्बत के शरणार्थी जुटे और हमने अपनी सरकार के लोकतंत्रीकरण का प्रयास शुरू किया।

वर्ष २०११ में मैंने यह निर्णय लिया कि अब मेरे पूरी तरह से रिटायर होने का समय आ गया है। उस रात मैं चैन से सोया, जो कि असामान्य बात थी। मैंने कोई सपना नहीं देखा। मैं सभी जिम्मेदारियों से मुक्त था।

ले टेम्प्सः क्या यह निर्णय सही था?

दलाई लामाः इस निर्णय से पहले, जबकि मेरे बहुत दूर जाने का रास्ता करीब है, मैंने खुद से पूछाः यदि मेरे साथ कुछ हो गया तो, यदि मेरी मौत हो गई तो, हमारे संगठन का क्या होगा? अब मुझे शांति है। मैं जानता हूं कि मेरे साथ यदि कुछ होता है, तो चुने गए लोग सब कुछ संभाल लेंगे। मैं अब भी संयत तरीके से यहां-वहां कुछ योगदान कर सकता हूं। लेकिन फिलहाल सात अरब लोगों के वैश्विक समुदाय के सदस्य होने के नाते मेरी रुचि मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देने में है। धर्मों, आस्तिकों एवं नास्तिकों, पूर्वी एवं पश्चिमी दुनिया, अफ्रीकी एवं एशियाइयों में कोई अंतर नहीं है। हम सभी मानसिक, भावनात्मक और शारीरिक रूप से एक ही प्राणी, मनुष्य हैं। हम सब एक खुशहाल जीवन जीना चाहते हैं। मेरा समय और ऊर्जा पूरी तरह से खुशहाली और धार्मिक सौहार्द् के लिए समर्पित है।

धर्मशाला के तिब्बतियों का कहना है कि आप ११३ साल तक जीएंगे। क्या अवलोकितेश्वर के अवतार होने के नाते आपके लिए यह अनुमान लगाना संभव है कि आप कितने साल जीएंगे?

मेरे सपनों और करीब २०० साल पहले तिब. बती भिक्षुओं के अनुमानों के मुताबिक १४वें दलाई लामा ११३ वर्ष तक जी सकते हैं।

इसका मतलब २०४८ तक ....

(वह अपने सहायक से गणना कराते हैं) आह....

वुएजर को इंटरनेानल वुमन ऑफ करेज अवॉर्ड

(तिब्बतरीव्यू और फायूल डॉट कॉम,
५ मार्च, २०१३)

बिजिंग स्थित तिब्बती लेखिका सेरिंग वुएजर ने खुद को मिले इंटरनेशनल वुमन ऑफ करेज अवॉर्ड (साहसी महिला) को १०० से ज्यादा की संख्या में पहुंच चुके उन आत्मदाह करने वालों को समर्पित किया है जिन्होंने चीनी कब्जे के विरोध में खुद को आग लगा ली है।

फायूल को पत्र लिखकर ४४ वर्षीय वुएजर ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र सरकार द्वारा उनको दिए गए इस सम्मान पर उनके अंदर 'मिली-जुली भावनाएं आ रही हैं।" वुएजर को चीनी संसदीय सत्र के बाद कड़े सुरक्षा प्रतिबंध लागू होने से वुएजर को फिलहाल नजरबंद रखा गया है।

वुएजर ने फायूल से कहा, "व्यक्तिगत रूप से मेरे लिए यह एक महान सम्मान की बात है। एक लेखिका होने के नाते मुझे लिखना पसंद है: एक यात्री के रूप में लिखना, एक तीर्थयात्री के रूप में लिखना और एक प्रत्यक्षदर्शी के रूप में लिखना। मेरे विचार से यात्रा, तीर्थयात्रा और गवाही मिल. कर एक हित तैयार करती है और एक-दूसरे के साथ संबंधों पर असर डालती है। और तथ्य यह है कि गवाह ही आवाज है।"

इस अवॉर्ड की घोषणा करते हुए अमेरिकी विदेश मंत्रालय ने कहा कि वुएजर "मुख्य भूमि की सबसे प्रमुख कार्यकर्ता के रूप में उभरी हैं जिसने चीन के तिब्बती नागरिकों के मानवाधिकारों की स्थिति पर खुलेआम बोला है, ऐसे समय में जब तिब्बत में आत्मदाह और विरोध प्रदर्शन बढ़ रहे हैं। विदेश मंत्रालय ने यह स्वीकार किया है कि वुएजर के वेबसाइट इनविजिबल तिब्बत, उनके कविता एवं आलेख, और ट्वीटर जैसे सोशल मीडिया मंच पर उनकी सक्रियता ने "तिब्बती नस्ल के लाखों लोगों को आवाज दी है जो कि चीन सरकार के प्रयास से सूचनाओं के प्रवाह पर अंकुश लगे होने से बाहरी दुनिया से अपनी बात नहीं कह पा रहे हैं।

बयान में कहा गया है कि "सुरक्षा एजेंटों की लगातार निगरानी और राजनीतिक रूप से संवेदनशील माने जाने वाले समय अवधि में नियमित रूप से नजरबंद रहने के बावजूद सेरिंग वुएजर ने बहादुरी पूर्वक तिब्बत के हालात का विवरण देने की दृढ़ता दिखाई है, यह गौर करते हुए कि 'सिर्फ प्रत्यक्षदर्शी बनने से काम नहीं चलेगा, उनको आवाज भी देनी होगी' और यह दुहराया है कि '१०० से ज्यादा जिन तिब्बतियों ने दमनकारी ताकतों के प्रतिरोध की अपनी आकांक्षा को अभिव्यक्त करने के लिए अपने शरीर को आग में झोंक दिया है, वे इस बात के लिए वजह हैं कि मैं पीछे नहीं हटूंगी और मैं समझौता नहीं करूंगी'।"

पिछले साल जर्मनी के रेडियो स्टेशन डायचे वैले द्वारा आयोजित सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग प्रतियोगिता में 'इनविजिबल तिब्बत' को पब्लिक च्वाइस के तहत सर्वश्रेष्ठ चुना गया था।

वुएजर ने अपने संदेश में इस सम्मान से नवाजने के लिए अमेरिकी सरकार को धन्यवाद दिया और कहा कि इससे पता चलता है कि तिब्बत में आत्मदाह को लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चिंता है।

तिब्बती लेखिका ने कहा, "मुझे इंटरनेशनल वुमेंस करेज अवॉर्ड देन के लिए मैं अमेरिकी विदेश मंत्रालय की आभारी हूं। मुझे लगता है कि यह इस बात का सूचक है कि उन्हें तिब्बत के पठार पर होने वाले आत्मदाहों की चिंता है। मैं यह अवॉर्ड उन सौ से ज्यादा लोगों को समर्पित करना चाहती हूं जिन्होंने अपने शरीर को आग में झोंक दिया है।"

वुएजर ने इस बात पर निराशा जाहिर की कि वे यह अवॉर्ड हासिल करने के लिए व्यक्तिगत तौर पर नहीं जा पा रही हैं। साहसी लेखिका ने कहा, "दुर्भाग्य से मैं व्यक्तिगत रूप से यह अवॉर्ड लेने नहीं आ सकती। सच तो यह है कि इस समय मैं यह अवॉर्ड न केवल लेने में असफल हूं, बल्कि मुझे नजरबंद करके रखा गया है।"

अमेरिकी अवॉर्ड मिलने के बाद इस तिब्बती ब्ला. गर पर चीनी प्रतिबंध और बढ़ गया है। तिब्बतन रीव्यू के अनुसार बीजिंग स्थित तिब्बती लेखिका और ब्लॉगर सुश्री सेरिंग वुएजर को अमेरिकी विदेश मंत्रालय का अवॉर्ड घोषित होने के बाद चीन ने काफी प्रतिशोधी रवैया अपनाया है। उनके अपार्टमेंट की मंजिल पर दो पुलिसकर्मी तैनात कर दिए गए हैं और उनके कहीं आने-जाने पर पहले से ही काफी सख्त पाबंदी है। वुएजर को यह अवॉर्ड ८ मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर वाशिंगटन में आयोजित एक समारोह में दुनिया के अलग-अलग हिस्सों से आई नौ और महिलाओं के साथ मिलना था, लेकिन चीन ने उन्हें पासपोर्ट देने से मना कर दिया।

रेडियो फ्री एशिया से ७ मार्च को वुएजर ने कहा, "उनको संदेह है कि अमेरिकी दूतावास (बीजिंग का) मेरे लिए एक आयोजन की व्यवस्था कर सकता है और ऐसा हुआ तो वहां मीडिया के लोग भी आ सकते हैं। इसलिए मुझे बाहर कहीं जाने से मना कर दिया गया है।" आरएफए के मुताबिक वुएजर ने कहा कि उनके पति विद्रोही लेखक वांग लिजियोंग को पहले ही करीब २० दिनों से बीजिंग के उनके घर में नजरबंद रखा गया है, जब देश की रबर स्टैंप संसद राष्ट्रीय जन कांग्रेस की बैठकें चल रही हैं।"

तिब्बत का जनक्रांति दिवस एक शहीद दिवस भी है

(तिब्बतनरिव्यू डॉट नेट, ११ मार्च)

मार्च-अप्रैल २००८ में क्रांतिकारी प्रदर्शनों के बाद आत्मदाह के साथ विरोध प्रदर्शन की कई घटनाओं के कारण धर्मशाला में निर्वासित तिब्बती प्रशासन ने तिब्बत के इतिहास में एक नया अध्याय शुरू किया है : तिब. बती राष्ट्रीय जनक्रांति दिवस १० मार्च को तिब्बती शहीद दिवस के रूप में भी मनाया जा रहा है। कशग यानि निर्वासित सरकार के मंत्रिमंडल ने २०१३ को 'तिब्बत आंदोलन के साथ एकजुटता' वर्ष के रूप में मनाने की घोषणा की है। यह घोषणा निर्वासित सरकार के दो मुख्य अंगों ने ध र्मशाला में बौद्ध मठ शुगलाकखंग में जनक्रांति दिवस की ५४ वीं वर्षगांठ पर मनाए जा रहे आयोजन में और उससे पहले की गई।

तिब्बत में जारी आत्मदाह पर चीन की सरकार के लगातार आरोपों को खारिज करते हुए कशग के बयान में कहा गया कि आत्मदाह की इतनी बड़ी संख्या हाल के इतिहास में देखने को नहीं मिलती है और इससे तिब्बत में जारी दमन और असंतोष का पता चलता है। तिब्बत में फरवरी २००९ के बाद से कुल १०७ आत्मदाह हो चुके हैं। इसमें कहा गया कि चीन की सरकार द्वारा तिब्बत पर कब्जा करना और वहां दमन करना ही वह प्रमुख कारण है, जिसके कारण तिब्बतवासी आत्मदाह कर रहे हैं।

इसमें तिब्बत में तिब्बत वासियों की महत्वाकांक्षा बारे में कहा गया, "कि वह है महान चौदहवें दलाई लामा की तिब्बत में वापसी, तिब्बती लोगों की आज़ादी और तिब्बत वासियों की एकता।" और इसे हासिल करना उनका परम कर्तव्य है।

बयान में कहा गया कि निर्वासित सरकार चीन के संविधान के दायरे में तिब्बत मुद्दे के समाधान के लिए प्रतिबद्ध है और इसके लिए अंतर्राष्ट्रीय समर्थन की अपील की गई।

लेकिन बीजिंग में चीन के राष्ट्रीय जन कांग्रेस या संसद में चीनी नेता पहले की तरह यह कहते रहे कि तिब्बत में तिब्बत वासियों को चीन की सरकार से कोई शिकायत नहीं है और जो विरोध प्रदर्शन चलाया जा रहा है वह उनके मुताबिक दलाई अलगाववादी गुट के उकसावे पर किया जा रहा है, जो आत्मदाह को महिमामंडित करने में लगे हुए हैं।

धर्मशाला में आधिकारिक रूप से क्रांति की वर्षगांठ के उत्सव के अंत में शहर के अदालत परिसर में एक रैली निकाली गई, जहां पहली बार एक तिब्बती ने आत्मदाह की कोशिश की।

पूरी दुनिया के चार महाद्वीपों में निर्वासित सरकार के छह मंत्रियों ने आधिकारिक समारोहों में हिस्सा लिया, जबकि सिक्योंग ने धर्मशाला में समाराह में हिस्सा लिया।

लंदन के तिब्बत सोसायटी ने १० मार्च को जानकारी दी कि तिब्बत वासियों और तिब्बत समर्थकों ने पुरी दुनिया के ३० देशों में क्रांति दिवस के अवसर पर सड़कों पर रैलियां निकाली। खासकर यूरोपीय संघ की राजधानी ब्रसेल्स में ५,००० तिब्बत वासी और तिब्बत समर्थकों ने तिब्बत में जारी मौजूदा स्थिति का वार्ता के जरिए समाधान की मांग करने के लिए एक विशाल रैली निकाली।

लंदन में डाउनिंग स्ट्रीट से चीन दूतावास तक तिब्बत फ्रीडम मार्च निकाला गया, जिसे सांसद टिम लोटन ने सम्बोधित किया।

एसएलट्रिप डॉट कॉम की १० मार्च की खबर के मुताबिक उटाह के साल्ट लेक सिटी में करीब १०० तिब्बती और तिब्बत समर्थकों ने वालेस एफ. बेनेट फेडरल भवन के संगमरमरी सीढ़ियों के सामने सड़क पर नारे लगाए और साल्ट लेक सिटी-काउंटी सरकारी भवन तक शांति यात्रा निकाली।

ट्विनसिटीज डॉट कॉम की १० मार्च की खबर के मुताबिक सैंट पॉल और मीनिएपोलिस के जुड़वां शहर में सैकड़ों तिब्बती और तिब्बत समर्थक इस

दिन की याद में सैंट पॉल में कैपिटल स्टेप पर इकट्ठा हुए। भीड़ ने हाथों में दलाई लामा की तस्वीरें और तिब्बत के राष्ट्रीय ध्वज लेकर वहां से एक यात्रा निकाली।

कनाडा के टोरंटो में करीब ३,००० तिब्बतियों ने आत्मदाह करने वाले शहीदों के सम्मान में ९९ ताबूत लेकर एक रैली निकाली। ताबूतों को तिब्बत के राष्ट्रीय ध्वज में लपेटा गया था। रैली को अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार उपसमिति के उपाध्यक्ष वेनी मार्सटन और पेगी नैश जैसे सांसदों ने भी सम्बोधित किया।

कनाडा की राजधानी ओटावा में सैकड़ों तिब्बतियों ने दूतावास तक मार्च किया। वे 'तिब्बत को आजाद करो' के नारे लगा रहे थे और कनाडा की सरकार से तिब्बत में सच्चाई का पता लगाने के लिए एक प्रतिनिधिमंडल भेजने की मांग कर रहे थे।

तिब्बती प्रदर्शनकारियों ने टोरंटो, वैंकुवर और कालगरी में चीन वाणिज्यदूतावास में भी घुसने की कोशिश की।

आस्ट्रेलिया के मेलबर्न में चीन, आस्ट्रेलिया और वियतनाम के नागरिकों के एक समूह ने भी इस दिन की याद में आयोजित कार्यक्रम में तिब्बतियों का साथ दिया। वहां ३०० से अधिक लोगों ने चीन के वाणिज्यदूतावास तक १० किलोमीटर तक की यात्रा निकाली। उन्होंने चीनी शासन के खिलाफ आत्मदाह करने वालों की तस्वीरें ले रखी थीं। निर्वासित सरकार के ध ार्मिक और सांस्कृतिक मामलों के मंत्री श्री पेमा छिंजोर ने भी जनसमूह को सम्बोधित किया।

फोकसताइवान डॉट टीडब्ल्यू की १० मार्च की खबर के मुताबिक ताइवान की राजधानी ताइपे में सैकड़ों कार्यकर्ताओं और तिब्बत समर्थक समूहों ने शहर में एक रैली निकाली। विपक्षी डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव पार्टी के अध्यक्ष सेंग-चांग भी इस रैली में शामिल हुए। उन्होंने उम्मीद जताई की तिब्बत जल्द से जल्द वास्तविक आज़ादी देखेगा।

भारत की राजधानी नई दिल्ली में हजारों तिब्बतियों और भारतीय समर्थक समूहों ने इस दिवस की याद में राजघाट से जंतर-मंतर तक यात्रा निकाली। वे दलाई लामा का फोटो लिए हुए थे और तिब्बत का झंडा लहरा रहे थे। भारत की आईएएनएस समाचार एजेंसी ने १० मार्च की खबर में लिखा कि रैली में शामिल करीब आधे लोग भारतीय थे।

माईरिपब्लिका डॉट कॉम ने १० मार्च की खबर में लिखा कि नेपाल में सरकार ने बौद्ध, स्वयंभू, ज्वालाखेल, बालूवतार (जहां चीन का दूतावास है) और हत्तीबन (काउंसेलर सेक्शन का स्थान) जैसे काठमांडू घाटी के कई संवेदनशल स्थानों पर खुफिया और सुरक्षा गतिविधि बढ़ा दी हैं।

एफपी के मुताबिक १० मार्च की सुबह को चीन विरोधी कार्यकर्ता होने के संदेह में १८ तिब्बतियों को हिरासत में ले लिया गया। इसके अलावा कुछ दिनों पहले इसी आधार पर चार अन्य तिब्बतियों को भी गिरफ्तार किया गया था। खबर में काठमांडू में तिब्बती कार्यकर्ताओं के हवाले से कहा गया कि उन्हें काठमांडू जिला प्रशासन के प्रमुख ने एक पत्र देकर १० मार्च को सार्वजनिक गतिविधि रद्द करने का आदेश दिया था।

द हिमालयन टाइम्स डॉट कॉम ने १० मार्च की खबर में कहा कि दर्जनों तिब्बतियों को गिरफ्तार किया गया है। खबर में पुलिस के हवाले से कहा गया कि उन्हें सिर्फ सूचना इकट्ठा करने के लिए गिरफ्तार किया गया है और उन पर कोई मामला दर्ज नहीं किया गया है।

जनक्रांति दिवस के मौके पर दुनिया भर के प्रमुख राजनेताओं ने तिब्बत के लिए आवाज उठाई। अमेरिका में प्रतिनिधि सभा की पूर्व अध्यक्ष और सभा में अल्पसंख्यकों की मौजूदा नेता नैंसी पेलोसी ने तिब्बती की बिगड़ती स्थि. ति और लगातार हो रहे आत्मदाह का उल्लेख करते हुए ८ मार्च को कहा, ''चीन की सरकार लम्बे समय से तिब्बत के लोगों की मूलभूत शिकायतों की उपेक्षा कर रहे है और उनका ध ार्मिक रूप से दमन कर रही है।''

डीपीपी की पूर्व अध्यक्षा साई इंग-वेन ने अपने फेसबुक पृष्ठ पर जॉन एफ कैनेडी के प्रख्यात 'मैं बर्लिन निवासी हूं' वक्तव्य की याद दिलाते हुए लिखा, ''मैं एक तिब्बती हूं। हम सभी तिब्बती हैं।'' डीपीपी के मौजूदा अध्यक्ष सू सेंग-चांग ने भी अपने फेसबुक पृष्ठ पर चीनी शासन में तिब्बत में बड़ी संख्या में हो रही आत्मदाह की घटना के बारे में लिखा।

तिब्बती जनक्रांति दिवस हमें कुछ याद दिलाता है

(हफिंगटन पोस्ट, १२ मार्च)

राजीव मल्होत्रा

करीब आधा शताब्दी से भी पहले १० मार्च, १९५९ को तिब्बतियों ने तिब्बत पर चीनी सैन्य कब्जे के खिलाफ विद्रोह कर दिया था, जो चीनी सेना ने १९५१ से शुरू किया था। इस विद्रोह का तिब्बतियों के लिए बहुत बुरा अंत हुआ और उन्हें भारी चीनी दमन का सामना करना पड़ा। इसके बाद दलाई लामा अपने समर्थकों के साथ भारत चले आए। हिमालय की १५ दिन तक पैदल दुर्गम थकाऊ यात्रा करने के बाद दलाई लामा ८०,००० तिब्बतियों के साथ चीनियों से बचते हुए सीमा पार कर भारत पहुंच गए। इसके बाद से ही हर साल १० मार्च को तिब्बती राष्ट्रीय जनक्रांति दिवस मनाया जाता है और तिब्बत आंदोलन के लिए समर्थन जुटाने के लिए दुनिया भर में विरोध प्रदर्शन आयोजित किए जाते हैं।

यहां तक कि पिछले कुछ वर्षों में तिब्बत में अब भी रह रहे लोगों में आत्मदाह जैसे चरम कदम उठाने की घटनाएं बढ़ी हैं, लेकिन ऐसे कोई संकेत नहीं मिल रहे कि चीन ने वहां अपने सांस्कृतिक नरसंहार पर कुछ अंकुश लगाया हो। ऐसे समय में जब अरब स्प्रिंग जैसी घटनाओं को मुख्य धारा की मीडिया का काफी आकर्षण मिलता है, यह

दुर्भाग्यपूर्ण है कि तिब्बतियों का संघर्ष जन चेतना में जगह नहीं बना पा रहा है। मध्य पूर्व चर्चित स्थानों की तरह तिब्बत में तेल जैसा प्राकृतिक संसाधन नहीं है जिसके लिए ताकतवर देश लड़ाई करें। इस्लामी दुनिया के आंदोलन के विपरीत तिब्बती आंदोलन की शांतिपूर्ण प्रकृति ने निश्चित रूप से तिब्बतियों की कुछ अच्छी छवि जरूर बनाई है। लेकिन वे आतंकवाद या न्यूक्लियर बम के निर्यातक के रूप में शेष दुनिया की सुरक्षा के लिए कोई खतरा नहीं बन रहे, इसलिए उन्हें बस इसे सामान्य तरीके से नजरअंदाज कर देना ही सुरक्षित लगता है। चीन की बढ़ती धमक और जिद से यह जनक्रांति धीरे-धीरे कमजोर पड़ रही है और पश्चिमी देशों में तिब्बतियों का समर्थन आधार भी ठंडा पड़ा है। दुःख की बात यह है कि आज पश्चिमी देशों के युवाओं में इस आंदोलन से जुड़ने के प्रति ६० के दशक के युवाओं से कम जुनून दिखता है।

किसी को जिज्ञासा हो सकती है कि इस आंदोलन में अब क्या बचा है। दलाई लामा के उम्रदराज होते जाने से चीन यह जानता है कि समय अब उसके पाले में आ रहा है और इसीलिए वह इंतजार करना चाहता है। उनके जैसे करिश्मा के बिना नए तिब्बती नेतृत्व से चीन को ऐसा लगता है कि परस्पर विरोधी तिब्बती संगठनों आंत. रिक टकराव बढ़ेगा और वह कुछ महत्वाकांक्षी नेताओं को लालच देकर, फूट डालो एवं राज करो की नीति अपनाते हुए इस आंदोलन को खत्म कर देगा। दूसरी तरफ तिब्बत की जमीन और वहां के पवित्र भौगोलिक इलाकों को पूरी तरह से कम्युनिस्टों के नियंत्रण में पर्यटकों के लिए आकर्षण में बदला जा रहा है और वहां हान चीनियों को बसाया जा रहा है। चीन द्वारा तिब्बती संस्कृति को भी बदला जा रहा है और उसे मंदारिन पहचान में "पचाने" की कोशिश हो रही है। हालांकि यह पूरी दुनिया के लिए चिंता का विषय होना चाहिए, लेकिन भारत और अमेरिका को इसकी सबसे ज्यादा चिंता होनी चाहिए। भारत की सभी विशाल नदियों (ब्रह्मपुत्र, गंगा और सिंध J) का उद्गम तिब्बत से ही होता है और चीन ने तिब्बत में तेजी से २० पनबिजली बांध बनाने की एक महत्वाकांक्षी परियोजना शुरू की है। इन सभी बांधों में यह क्षमता होगी कि वह इन नदियों के पानी को भारत की तरफ से मोड़ लें और उसे चीन के अंदर लेकर जाएं। चीन की प्यास बुझाने की यह परियोजना भारत की कीमत पर होगी जहां वर्षों तक सूखे का सामना करना पड़ेगा। मैंने कई साल पहले ही इस परिदृश्य का अनुमान लगाया था, जब इसके बारे में बात करना चलन में नहीं था, लेकिन हाल के दिनों में यह अचानक चर्चित विषय बन गया है।

तिब्बत असल में भारत की तरफ निशाना बनाकर तैनात किए गए चीनी न्यूक्लियर हथियारों के लिए सैन्य केंद्र में तब्दील कर दिया गया है। इससे चीन मिनटों के भीतर भारत पर इस तरह के हथियारों से हमला कर सकता है। तिब्बत ही वह रास्ता है जिसके आधुनिक हाइवे, रेलमार्ग और पाइपलाइन के द्वारा चीन-पाकिस्तान सैन्य और अन्य सामानों की ढुलाई कर रहे हैं। इसकी वजह से चीन अब पाकिस्तान के हिस्से में आने वाले हिंद महासागर के हिस्से तक पहुंच बना चुका है और भारत के साथ किसी भी टकराव की स्थिति में पाकिस्. तान को चीन से तत्काल सहायता प्राप्त होगी। वास्तव में यदि तिब्बत एक निष्पक्ष, स्वायत्त और सैन्य रहित देश होता भारत-पाकिस्तान सुरक्षा की स्थिति को त्रिपक्षीय नहीं बल्कि द्विपक्षीय तरीके से निपटाने की ज्यादा संभावना होती।

अमेरिका के लिए चीन सभी क्षेत्रों में उसका सबसे प्रमुख विरोधी और प्रतिस्पर्धी है, और इस बात को दोनों देश अच्छी तरह समझते हैं। चीन ने अपने इरादों को कभी भी छिपाया नहीं है, लेकिन इसके समाधान के लिए अमेरिका के पास कोई निश्चित योजना नहीं है। तिब्बत ही चीन के लिए वह रास्ता है जिससे होकर वह हिंद महासागर के महत्वपूर्ण व्यापारिक रास्तों, मध्य एशिया के तेल एवं गैस भंडार और दक्षिण में धनी आसियान देशों तक पहुंच सकता है।

अपने अदूरदर्शी विदेश नीति का उदाहरण पेश करते हुए अमेरिका ने मानवाधिकार उल्लंघन के आधार पर वर्षों तक म्यांमार को अलग-थलग रखा, जिसका सबसे ज्यादा नुकसान म्यांमार की गरीब जनता पर हुआ, न कि सैन्य जुंटा शासन पर। इससे म्यांमार चीन के हाथों खेलने लगा। यदि मानवाधिकारों में सुधार ही ईमानदार इरादा है तो अमेरिका क्या इसी तरह का रवैया चीन के साथ भी अपनाएगा जहां उससे भी ज्यादा बड़े पैमाने पर मानवाधिकार का उल्लंघन हो रहा है। म्यांमार असल में अमेरिकी अपराध बोध से छुटकारा पाने और अपनी ताकत दिखाने का आसान निशाना बन गया। इस तरह चीन को एक दशक से म्यांमार में एकाधिकार बनाने का मौका मिल गया जिसका इस्तेमाल करते हुए उसने म्यांमार के प्राकृतिक संसाधनों पर अपना सामरिक नियंत्रण लंबे समय के लिए मजबूत कर लिया और हिंद महासागर तक पहुंच में आसानी के लिए उसे विशेषाधिकार वाले रास्ते मिल गए। यह सब संभव बनाने के लिए फिर तिब्बत की सामरिक स्थिति महत्वपूर्ण हो जाती है।

खुद तिब्बती भी चाहें तो अपने लिए उससे ज्यादा कर सकते हैं, जो अभी वे जो कर रहे हैं। सबसे पहले उन्हें दलाई लामा की देखरेख में विश्व मंच पर अपने नेतृत्व का नया चेहरा उभारना चाहिए। करमापा ऐसे युवा, करिश्माई नेता हो सकते हैं, जिन्हें भारत-तिब्बत बौद्ध धर्म की गहरी समझ भी है और उनके पास तेज दिमाग भी है। दुर्भाग्य से उन्हें काफी हद तक भारत तक सीमित रखा गया है। कुछ सूत्रों के अनुसार भारत सरकार अभी भी निश्चिंत नहीं है कि कहीं उन्हें चीन ने तो नहीं भेजा है-एक मंचूरियन दावेदार के रूप में। इस मामले को तत्काल हल कर लेना चाहिए, इसकी जगह की दलाई लामा के परिदृश्य से बाहर हो जाने के बाद ऐसा किया जाए। यह बेहतर होगा कि अगली पीढ़ी के नेतृत्व को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय बनाया जाए और सभी पहलुओं में उनका परीक्षण किया जाए, जबकि दलाई लामा संरक्षक की भूमिका निभा सकते हैं और इस बदलाव पर नजर रख सकते हैं। हमें इस भरोसे नहीं बैठना चाहिए कि चीन की अगली पीढ़ी का हृदय परिवर्तन होगा। चीन ने अपने शिक्षा प्रणाली का बेहतर इस्तेमाल करते हुए युवाओं के मन में यह बात अच्छी तरह से बैठा दिया है कि तिब्बत, चीन का आंतरिक हिस्सा है और उसने तिब्बत के स्वाधीनता आंदोलन को शत्रु विदेशी ताकतों की साजिश और शीर्ष तिब्बती नेताओं को इस साजिश का सहयोगी के रूप में दुष्प्रचारित किया है।

शतरंज के ऐसे बिसात पर तिब्बत के खिलाफ माहौल वास्तव में भारी साबित होता दिख रहा है। लेकिन इतिहास में देखें तो कई अन्य आंदोलनों में भी ऐसी नाउम्मीदी का दौर दिखा है। मैं कामना करता हूं कि तिब्बती आंदोलन भी सभी देशों के युवाओं में अपना नया हिमायती पा सके।

तिब्बतियों के संघर्ा की अनदेखी न हो

(राश्ट्रीय सहारा, २ मार्च)

v#.k frokjh

चीन मे ंआत्मदाह के जरिए विरोध प्रदर्षन के लिए उकसाने के आरोप में पुलिस ने पांच तिब्बतियों को गिरफ्तार कर लिया। इस समाचार को विषेश उल्लेख के साथ प्रचारित किया गया है कि उनमे से एक बौद्ध भिक्षु भी है। इस प्रचार का उद्देष्य आत्मदाह रोकने से ज्यादा इस बात को प्रचारित करना मालूम होता है कि आत्मदाह एक प्रायोजित प्रतिक्रिया है। चीन द्वारा बौद्ध भिक्षु के षामिल होने को प्रचारित करने का मकसद दलाई लामा पर निषाना साधना है और साथ ही उन लोगों का मुंह बंद करना भी, जो इसे मानवाधिकार का मसला बनाकर अंतरराश्ट्रीय समुदाय के बीच चीन की छवि खराब कर सकते हैं। सचाई में मसला उकसावे का नहीं बल्कि तिब्बतियों के जेहन में उठ रहे संताप का है। चीन के चक्रव्यूह के खिलाफ अब तक ६५ तिब्. बती मौत का वरण कर चुके हैं। लेकिन उन्होंने किसी को नुकसान नहीं पहुंचाया। वे मानव बम नहीं बने। उन्होंने बगैर किसी को कोई नुकसान पहुंचाए खुद को नुकसान पहुंचाने का गांधी मार्ग चुना है, ताकि दुनिया का ध्यान तिब्बत में चीनी दमन की ओर आकर्शित कर सकें। लगातार षांति प्रदर्षनों के बाद कोई सुनवाई न होने पर आखिर उनके पास और रास्ता ही क्या है? दुनिया में एक से एक षक्तिषाली, एक से एक षांतिप्रिय देष व संगठन मौजूद हैं। है कोई, जो तिब्बत के साथ चीनी चक्रव्यूह तोड़ने के लिए आगे आया हो? यह सवाल भारत से भी है।

हैरत की बात है कि इतने बड़े पैमाने पर तिब्बतियों के आत्मदाह को मीडिया में ठीक से प्रचारित नहीं किया गया है। प्रचारित किया गया, तो उकसाने के दोश को। हैरत की बात यह भी है कि बड़ा भाई बनने का दावा करने वाले भारत की जनता और सरकार ने भी इस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं जताई है। दुनिया में षांति और कल्याण की स्थापना के लिए स्थापित 'यूनेस्को' जैसे संगठन ने भी कोई आपत्ति दर्ज नहीं कराई। क्या चीन में ऐसी खबरों पर सेंसर है?

क्या यह सच नहीं कि तिब्बत के आजाद न हो पाने से तिब्बती बहुत व्यथित हैं, चीनी खुष हैं और षेश दुनिया में तिब्बत को लेकर सन्नाटा है। गांधीवादी राध ा बहन इस सन्नाटे से स्तब्ध हैं और तिब्बत में एक के बाद एक हो रहे आत्मदाह के ताप से संतप्त। 'गांध ी मार्ग' नामक पत्रिका में इसका उल्लेख है। सुश्री राध ा भट्ट गांधी षांति प्रतिश्ठान, नई दिल्ली की अध्यक्ष हैं। उन्होंने इस मामले में दुनिया के राश्ट्र प्रमुखों को चिट्ठी लिख सही मायने में एक जिम्मेदार भारतीय का दायित्व निर्वाह किया है या सन्नाटे में एक कंकड़ उछाल दिया है। अब दुनिया को तय करना है कि वह इसकी अनदेखी करे या इस आह्वान को आगे बढ़ाये।

सच यह है कि राजषाही से नेपाल और भूटान की मुक्ति से लेकर सोवियत रूस और चेकोस्लोवाकिया जैसे देषों से आजाद हुए राश्ट्रों की प्रेरणा ने तिब्बतवासियों की कसक बढ़ा दी है।

आजाद न हो पाने की बेबसी और अपने ही घर में अपने धर्मगुरु दलाई लामा का न लौट पाना तिब्बतियों को इस कदर नागवार गुजर रहा है कि उन्होंने जीवन की बजाय मौत का वरण करना षुरू कर दिया है। आत्मदाह की इन घटनाओं में से दो-तिहाई उन इलाकों में हुई हैं, जिन्हें चीन तिब्बत का इलाका मानने से इंकार करता है। १९५१ में चीन द्वारा तिब्बत का अधि ग्रहण किए जाने के वक्त यह इलाके 'खाम' और 'आमदो' प्रांत में आते थे। १९६० में तिब्बत के पुनर्ग. ठन के बाद चीन ने इन इलाकों को युन्नान, सिचुआन, क्विंघई और गांजू प्रांत में मिला लिया। गौरतलब है कि तिब्बत में आत्मदाह करने वाले ९० प्रतिषत युवा हैं। चिट्ठी बताती है कि चीनी पुलिस ने आत्मदाह करने वालों को बचाने की बजाए उन पर लात-घूंसे बरसा मानवाधिकार कानूनों का खुला उल्लंघन किया। कई मामलों में आत्मदाह करने वाले तिब्बतियों पर हान चीनियों ने पत्थर तक फेंके। हान चीनी वे लोग हैं, जिन्हें चीन ने बाहर से लाकर उक्त इलाकों में जबरदस्ती बसा दिया है। क्या यह विरोधाभास नहीं कि कष्मीर में मानवाधिकार उल्लंघन का ढिंढोरा पीटने वाले आत्मदाह की आग से तप रहे तिब्बत के मामले में आज भी गूंगे ही बने हुए है।

यह जानते हुए कि आत्मदाह की सिलसिलेवार घटनाएं चीन द्वारा तिब्बतियों के जीवन जीने के अधिकार की घोर उपेक्षा का परिणाम हैं, मानवाधिकार के झंड. ाबरदारों की चुप्पी को क्या समझें? इसे चेताते हुए राध ा बहन ने लिखा है- 'तिब्बत के युवाओं के प्रति हमारी यह घोर उपेक्षा, हमारा यह असहयोग दुर्भाग्य से उन हजारों लोगों और आंदोलनों को एक गलत संकेत देगा, जो आज अपने अधिकार के लिए संघर्ष कर रहे हैं। आज हमारा यह विचित्र मौन उन्हें अपने रास्ते तक बदलने के लिए मजबूर कर सकता है।'

क्या इस बात की अनदेखी करना विदेष नीति के मोर्चे पर बड़ी चूक नहीं होगी कि भारत के लगभग सभी पड़ोसियों- पाक, नेपाल, बांग्लादेष, श्रीलंका, म्यांमार को चीन अपने मोहपाष में बांध चुका है। वह भारत के सभी पड़ोसी देषों मे ंअपना 'बेस' बना रहा है। पाक ने हाल में बलूचिस्तान स्थित ग्वादर पोर्ट का प्रबंधन चीन को सौंपकर इस की तसदीक कर दी है। नतीजा सामने है। भारत खुद को जिनके बड़े भाई होने का दावा करता है, वे अब भारत को बड़ा भाई मानने से ही इंकार कर चुके हैं।.

सिर्फ बड़े भाई की दृश्टि से नहीं, बल्कि स्वयं भारत की सुरक्षा की दृश्टि से भी चीन की हरकतों पर भारत की चुप्पी अब ठीक नहीं। भारत आने वाली ब्रह्मपुत्र जैसी कई नदियों मे वह न सिर्फ अपना रेडियोधर्मी कचरा बहा रहा है, बल्कि पैसा लेकर दूसरे देषों को भी ऐसा करने की अनुमति उसने दे दी है। इन सभी नदियों के मूल स्रोत तिब्बत में हैं। .खतरनाक रेडियोधर्मी कचरा और बांध अंततः भारत के उत्तर-पूर्वी इलाकों को बर्बाद करेंगे। उत्तर-पूर्व के पानी और पर्यावरण की बर्बादी आजीविका का संकट लायेगी। उत्तर-पूर्व की ओर से हम अभी ही निष्चिंत नहीं हैं। चीनी कवायद अंततः वहां विद्रोह को जन्म देगी। क्या इस पर दो राय हो सकती है?

हो सकता है, इस पर अनेक राय हों, लेकिन इस पर दो राय नहीं हो सकती कि भारत को लेकर चीन का चक्रव्यूह यदि टूटेगा, तो उसमें अभिमन्यु की भूमिका तिब्बत ही निभाएगा और आज क्योंकि न कृश्ण की छद्म माया है और न अर्जुन का गांडीव अतः महाभ. ारत में अभिमन्यु की मौत हुई, तो तटस्थ रहने के कारण दोशी भी भारत ही होगा और दुश्प्रभावित भी। बहरहाल, तिब्बत में आत्मदाह के संकेत दूरगामी हैं। नये रास्ते पर है तिब्बत का स्वतंत्रता संग्राम। अतः भारत को तिब्बत को अनदेखा नहीं करना चाहिए। चीन में नई सरकार आनेवाली है। सही वक्त है। भारत भी चुने चीनी नीति की नई राह। न सही कोई और तो मीडिया ही उजागर करे चीनी कुचक्र। यही भारतीयता है।

आग की लपटों में तिब्बत: बढ़ रहे हैं आत्मदाह

(डिप्लोमैट, १५ मार्च, २०१३)

जोहाथन डेहार्ट

चीन में नेतृत्व परिवर्तन के साथ ही तिब्बती भिक्षुओं के आत्मदाह की घटनाएं और बढ़ी हैं। बीजिंग लगातार उनके संदेशों को नजरअंदाज कर रहा है।

गत २४ फरवरी को बीस वर्ष से कुछ ज्यादा के एक तिब्बती किसान फागमो ढुनड्रुप ने विरोध प्रदर्शन का चरम तरीका अपनाते हुए खुद को आग लगा ली। यह घटना पूर्वी तिब्बत के आमदो इलाके में क्विंघई प्रांत के सोशार प्रशासनिक क्षेत्र में स्थित छाछुंग मठ में स्थित मठों के शास्त्रार्थ वाले इलाके की है।

इसके एक दिन बाद करीब बीस साल के एक और तिब्बती सेउंग क्याब ने चीन के गांसू प्रांत स्थित गन्नान तिब्बती स्वायत्तशासी क्षेत्र के लुकु काउंटी स्थित शित्सांग गोंसार मठ के बाहर ऐसा ही कदम उठाया। इन दोनों की मौत हो गई।

उसी दिन सिचुआन प्रांत में एक तीसरे भिक्षु ने भी आत्मदाह कर लिया। पुलिस ने उनके शरीर में लगी आग की लपटों को बुझाया और उन्हें तत्काल एक अस्पताल लेकर गई, जिसके बाद उन्हें किसी अज्ञात स्थान पर ले जाया गया है।

तिब्बती भिक्षुओं की बढ़ती आत्मदाह की सूची में ये सबसे हालिया नाम हैं। इंटरनेशनल कैंपेन फॉर तिब्बत की संचार निदेशक केट सौंडर्स के मुताबिक फरवरी २००९ से अब तक चीन में करीब १०७ तिब्बतियों ने खुद को आग लगा लिया है, जिनमें एक १९ वर्षीय छात्रा, चार बच्चों की एक विधवा मां और एक महत्वपूर्ण लामा के अवतार के दादा जी शामिल रहे हैं और संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है। सौंडर्स ने द डिप्लोमैट को बताया, "चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की कांग्रेस के आयोजन और उसके बाद (दशक में एक बार होने वाला नेतृत्व परिवर्तन) तिब्बत में आत्मदाह की संख्या बढ़ी है और पिछले नवंबर माह में कांग्रेस के आयोजन के दौरान ही २८ तिब्बतियों ने खुद को आग लगा ली है। आत्मदाह की हाल की लहरों पर उन्होंने कहा, "यह पिछले ६० वर्षों में दुनिया भर में राजनीतिक विरोध में आत्मदाह की सबसे बड़ी लहर है।"

तीर्थयात्रा पर आए लोगों को यह दृश्य देखकर कैसा लगा होगा इसकी कल्पना करना कठिन है। ये तीर्थयात्री तिब्बती नव वर्ष (लोसार) के समारोह के अंत में पिछले महीने मठों में जुटे थे। द न्यूयॉर्क टाइम्स के प्रख्यात युद्ध संवाददाता डेविड हालबरस्टम ने अपनी किताब द मेकिंग ऑफ अ क्वैगमाइर में ऐसी ही एक घटना का उल्लेख किया है। इस मामले में बौद्ध भिक्षु थिच क्वांग डुग के आत्मदाह का वर्णन किया गया है। किताब में लिखा गया है: "एक मनुष्य के शरीर से लपटें बाहर आ रही थीं, उसका शरीर धीरे-धीरे विघटित हो रहा था और कुम्हला रहा था, उनका सिर काला हो रहा था और कोयले में बदल रहा था। हवा में मानव मांस जलने की गंध फैल गई थी, यह मनुष्य आश्चर्यजनक रूप से काफी तेजी से जल गया। मेरे पीछे मैं वियतनामियों की सिसकी सुन सकता था जो अब वहां जमा हो रहे थे। मैं इतना स्तब्ध था कि चिल्ला भी नहीं पाया, इनता भ्रमित था कि समझ में नहीं आ रहा कि क्या नोट करूं और लोगों से क्या सवाल पूछूं, यहां तक कि मैं इतना हक्का-बक्का था कि कुछ सोच भी नहीं पा रहा था...जलते हुए उसने जरा भी हरकत नहीं की, एक शब्द भी नहीं बोला, उसकी बाह्य तौर पर शांति उसके आसपास कराह रहे लोगों से बिल्कुल विपरीत थी।"

ध्यान की अवस्था में बैठे आग की लपटों में घिरे थिक क्वांग डक की एक बार-बार दिखने वाली तस्वीर, जैसा कि हाल्बरस्टम ने वर्णन किया है, अन्याय के खिलाफ विरोध के लिए दुनिया भर में प्रतीक बन गई। यह तस्वीर इतनी व्यापक हो गई है कि एमटीवी पीढ़ी भी इसे तत्काल पहचान लेती है क्योंकि १९९२ में मशीन्स के अपने नाम वाले टाइटल कवर के जारी होने के खिलाफ रोष में इसे इस्तेमाल किया गया था।

टाइम्स पत्रिका के एक लेख के अनुसार आत्मबलिदान करने की यह चरम कार्रवाई कोई नई बात नहीं है। आधुनिक समय में देखें तो १९६८ में सोवियत कब्जे के विरोध में चेक लोगों ने इस तरीके का इस्तेमाल किया था। १९९९ में टर्की के विराध में कुर्द लोगों ने यह तरीका अपनाया था और बीजिंग प्रशासन का दावा है कि वर्ष २००९ में टिनामेन चौक के बीचोंबीच फालुन गोंग संप्रदाय के भक्तों ने खुद को आग लगा लिया था। वर्ष २०१० के अंत में उत्तरी अफ्रीका, खासकर ट्यूनिशिया में आत्मदाह की एक लहर शुरू हुई। इसी तरह दक्षिण कोरिया में बौद्ध भिक्षु वेन. मूनसु ने चार नदियों के पुनरुद्धार परियोजना के विरोध में २०१० में खुद को आग के हवाले कर दिया था।

लेकिन काफी हद तक अब तिब्बत आत्मदाह का वैश्विक केंद्र बन गया है। तिब्बतियों के लिए यह कार्रवाई गहरे सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व की है जिसकी वजह से चीन सरकार उनके आध्यात्मिक नेता दलाई लामा को वापस बुलाने को मजबूर हो सकती है।

सौंडर्स ने कहा, "आत्मदाह करने वाले बहुत से तिब्बतियों ने अपने कदम के धार्मिक परिप्रेक्ष्य को रेखांकित किया है। ऐसे कई लोगों की जब मौत हुई तो उनके हाथ प्रार्थना की मुद्रा में जुड़े हुए थे। लगभग सभी आत्मदाह करने वाले तिब्बतियों का साफ संदेश यही था कि दलाई लामा को तिब्बत वापस आने दिया जाए। आत्मदाह को वैसे तो भारी मीडिया कवरेज मिलता रहा है, जैसे बर्मा के भगवा क्रांति को, लेकिन तिब्बत में घरेलू स्तर पर विरोध प्रदर्शन के शांतिपूर्ण तरीके भी जड़ें जमा रहे हैं। मार्च २००८ के बाद उभरे ऐसे दो उल्लेखनीय उदाहरण ल्हाकर आंदोलन और सम्पा (भुने हुए जौ से संबंधित) क्रांति हैं। सौंडर्स ने कहा, "तिब्बत में सांस्कृतिक सहिष्णुता का एक वैकल्पिक इतिहास आकार ले रहा है क्योंकि तिब्बती अपने संस्कृति के प्रमुख मूल्यों की रक्षा के लिए लगातार ज्यादा से ज्यादा साहसीपूर्ण कदम उठा रहे हैं।

सेम्पा क्रांति तिब्बती पहचान को मजबूत करने के प्रयासों से जुड़ी हुई है। इस प्रयास में कलाकार शामिल हैं जो गैर परंपरागत तरीके से तिब्बती मूल भाव को दर्शाते हैं, रैपर्स, हिप-हाप कलाकार हैं जो अपने गीतों में निर्वासित दलाई लामा या करमापा की लाक्षणिक तरीके से जिक्र करते हैं और ऐसे समुदाय हैं जिनका उद्देश्य तिब्बती भाषा का संरक्षण करना है।

ल्हकार आंदोलन में हर बुधवार को दलाई लामा के "आत्मीय दिन" के रूप में माना जाता है जिसके दौरान तिब्बती परंपरागत पोशाक पहनते हैं, अपनी मातृभाषा बोलते हैं, तिब्बती रेस्त्रां में ही खाना खाते हैं और जहां तक संभव हो तिब्बती कारोबारियों के साथ ही कारोबार करते हैं।

सभी तिब्बती इन आत्मदाहों को अपने दिल से भूल नहीं पा रहे हैं और इस कार्रवाई ने निस्संदेह पूरे समुदाय और इलाको को स्तब्ध किया है। सोनम थार्ग्ये की कहानी बताने वाली सौंडर्स ने कहा, "कई मामलों में आत्मदाहों के बाद लोग खुलकर अपने समुदाय के साथ खड़े हुए हैं।"

१७ मार्च, २०१२ को ४३ वर्षीय इस किसान के आत्मदाह के बाद उनके स्थानीय रेबकोंग स्थित तिब्बती समुदाय ने आपस में मिलकर आसपास के कई चारागाहों और जमीन के विवाद खुद सुलझा लिए हैं और उनमें आपसी रिश्ते सुधरे हैं। इसी तरह का सहयोग दिखाते हुए कई लोगों ने काफी दूर तक यात्रा कर आत्मदाह करने वाले लोगों के लिए प्रार्थनाएं की हैं और उनके परिवार को भौतिक सहयोग दिया है।

सौंडर्स ने कहा, "आत्मदाह को लेकर समूचे तिब्बत से मिली प्रतिक्रिया दिखाती है कि इन कार्रवाई का महत्व एक संदेश की तरह है और इससे समूचे तिब्बती इलाकों में तिब्बती एकजुटता एवं एकता की दृढ़ भावना का विकास हो रहा है। एक तिब्बती ने कहा

कि तिब्बतियों पर आत्मदाह का अनुमान माप से परे है।"

इस तरह के कुल आत्म-बलिदान का असर तो बहुत ज्यादा हो सकता है, लेकिन सौंडर्स ने बताया कि आत्मदाह के मसले ने तिब्बत में तिब्बती संस्कृति, खासकर आत्मदाह के मसलों के बारे में पेचीदा सवालों की लंबी सूची खड़ी कर दी है।"

उन्होंने कहा कि, "तिब्बती सोच के मुताबिक इस जीवन में किए जाने वाले कार्यों और प्रेरणाओं का भविष्य के जीवन पर असर पड़ता है....बौद्ध धर्म आत्मदाह के खिलाफ है, लेकिन बौद्ध धर्म में ऐसा एक दृष्टांत है कि दूसरों के फायदे के लिए बलिदान स्वरूप खुद के शरीर को पेश कर दिया जाता है।" सौंडर्स महायान बौद्ध धर्म के कमल सूत्र का हवाला देती हैं, जिसके २३वें अध्याय में बोधिसत्व नरेश के बारे में एक अंश है, जो उनके मुताबिक "अपने शरीर को आग के हवाले करके शरीर के निःस्वार्थ प्रकृति के बारे में अपनी आंतरिक दृष्टि का प्रदर्शन करते हैं और धर्म के प्रकाश को १२०० वर्षों तक फैलाते हैं।"

सैंटा बारबरा के कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी में तिब्बती बौद्ध और सांस्कृतिक अध्ययन के प्रोफेसर जोस इग्नासियो कैबेजोन कहते हैं, "प्राचीन पाठ इस तरह के कार्यों पर अंकुश भी लगाते हैं। उदाहरण के लिए, यह कहा गया है कि ऐसे व्यक्ति को पूरी तरह से करुणा से प्रेरित होना चाहिए।" कैबेजोन सही कहते हैं कि आत्मदाह करने वाले लोगों के इरादे या उनके दिमाग में उस समय चल रही सोच को पूरी तरह से जान पाना असंभव है, लेकिन उनके द्वारा दिए गए कई बयान ऑनलाइन मौजूद हैं।

क्विंघई प्रांत में १७ नवंबर, २०१२ को आत्मदाह करने वाले ऐसे ही एक व्यक्ति सोंग्ये सेरिंग का बयान इस प्रकार है: "तिब्बत में कोई आज़ादी नहीं है, परमपावन दलाई लामा को घर वापस नहीं आने दिया जा रहा। पंचेन लामा (दलाई लामा के बाद दूसरे सर्वोच्च लामा) जेल में हैं। हम बर्फ के शेर की संतान हैं, लाल चेहरे वाले तिब्बतियों की संतान। कृपया हमारे बर्फीले पहाड़ की गरिमा को याद रखें।"

वास्तव में बीजिंग ने इस तरह की कार्रवाई के दमन करने की कोशिश की है। पिछले गुरुवार को द न्यूयॉर्क टाइम्स में एक लेख में यह बताया गया कि चीन के उत्तर-पश्चिमी प्रांत गांसू में पांच तिब्बतियों को इस आरोप में गिरफ्तार किया गया है कि उन्होंने पिछले अक्टूबर और नवंबर में कई विरोध प्रदर्शन करने वालों को आत्मदाह करने के लिए उकसाया था। चीन की सरकारी एजेंसी की खबर में कहा गया कि इन उकसाने वाले लोगों ने आत्मदाह करने वालों को इस बात के लिए समझाया कि मरने के बाद वे नायक बन जाएंगे। इन गिरफ्तार पांच लोगों में से चार बौद्ध भिक्षु हैं।

सौंडर्स ने कहा, "चीन सरकार इन आत्मदाहों को कम करके दिखाने की कोशिश की है और इस तरह से चीनी नेतृत्व की तिब्बत नीति में गहरे संकट का खुलासा हो जाता है। आत्मदाह करने वाले चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के इस दावे को प्रभावशाली और दृश्य तरीके से गलत साबित कर रहे हैं कि तिब्बतियों का जीवन स्तर सुधर रहा है और वे तिब्बत में पार्टी की वैधता को सीधी चुनौती देते हैं। लोगों को आत्मदाह करने वालों के खिलाफ करने का अधिकारियों का प्रयास बुरी तरह विफल साबित हुआ है।"

धीरे-धीरे ऐसा लग रहा है कि इन कार्रवाई से निकले संदेश भारी सुरक्षा वाले तिब्बत की सीमाओं से बाहर जा रहे हैं। ज्यादातर चीनी लोग तिब्बती अधिकारों को लेकर बेपरवाह हैं, लेकिन आत्मदाह की बढ़ती संख्या जागरूकता बढ़ा रही है। कम से कम उनका ध्यान तो आकर्षित होना शुरू हुआ है।

१२ नवंबर, २०१२ को चीनी मानवाधिकार वकील जियांग टिनायोंग ने ट्वीट किया: "कुछ लोग कहते हैं कि दुनिया तिब्बती आत्मदाह के बारे में सुन्न और उदासीन हैं। मैं इससे पूरी तरह सहमत हूं। खासकर हान चीनियों को ऐसा लगता है कि यह उनकी प्र. ासंगिकता की बात नहीं है या वे जानबूझकर इस समस्या को नजरअंदाज कर रहे हैं।"

Mhdkf Mx ^Mkiph^

आज़ादी का मतलब जेल से भागना नहीं, बल्कि अपने खुद के भय से मुक्ति पाना है।

तिब्बत पर चीनी कब्जे, दलाई लामा के निर्वासन, सांस्कृतिक क्रांति जिसने तिब्बत को हिलाकर रख दिया, देंग जियोपिंग के साम्यवाद एवं उपभोक्तावादी बाजार अर्थव्यवस्था के काफी समय बाद और यहां तक कि जब दुनिया तिब्बत और अहिंसा को भूल चुकी है, तिब्बतियों ने दो चीजें नहीं छोड़ी हैं: प्रार्थना करना और गाना। ड्रापची तिब्बत पर एक दुर्लभ फिल्म है जो भीषण दर्द झेल रही तिब्बती जनता की कहानी कहती है। बेहद साधारण कथा शैली में इसे पेश करने वाली ड्रापची एक ऐसे तिब्बती महिला की कहानी है तिब्बत के काफी आंतरिक हिस्से में स्थित एक सीमांत पहाड़ी इलाके में बने बंकर जेल से भागकर बाहर निकल आई थीं। यह साहसी महिला अपनी जान बचाते हुए हिमालय के पहाड़ों की चढ़ाई करते हुए नेपाल में घुस गईं और एक निर्वासन गंतव्य यूरोप जाने से पहले वहां उन्होंने कुछ दिन अपने बीते भयावह दिनों को याद करते हुए बिताए।

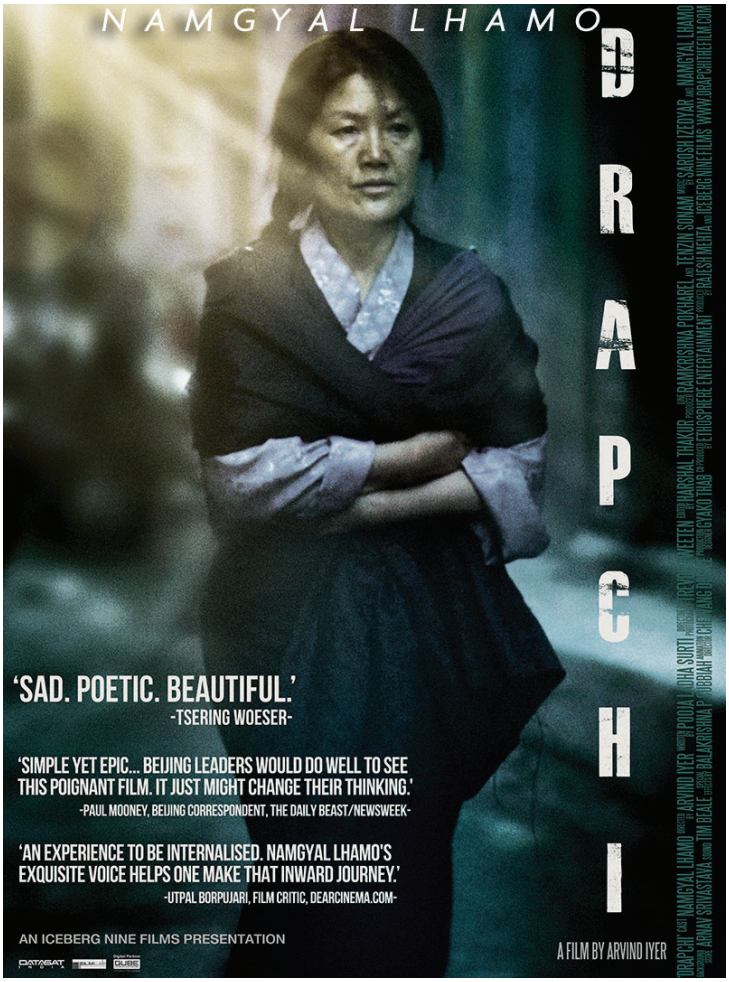

अरविंद अय्यर की यह पहली फीचर फिल्म बॉ. लीवुड के केंद्र मुंबई से बनने वाली एक असामान्य प्रोडक्शन है। एक बड़ी मूवी इंडस्ट्री के केंद्र मुंबई ने इसके पले कभी भी तिब्बत पर कोई फिल्म नहीं बनाई थी, जबकि हॉलीवुड में मार्टिन स्कोरससे द्व ारा दलाई लामा की जीवन गाथा पर फिल्म कुनदुन बन चुकी है और ब्रैड पिट की भूमिका वाली जीन-जैक्यूस अन्नावुड की फिल्म 'सेवन ईयर्स इन तिब्बत' भी बनाई जा चुकी है।

इस फिल्म का शीर्षक ल्हासा के ड्रापची जेल से लिया गया है जो हाल तक तिब्बत की सबसे कुख्यात जेल मानी जाती रही है और आतंक, नियंत्रण तथा समूचे अधिकृत तिब्बत में तिब्बतियों को अवैध तरीके से हिरासत में लेने की कहानी को दर्शाने के लिए इस नाम को एक उपमा की तरह इस्तेमाल किया गया है।

अय्यर कोई आंदोलनकारी नहीं हैं। उनका काम कहानी बयां करना है। उन्होंने रुढ़ियों को सफलतापूर्वक तोड़ा है और उनकी नायिका यिगा ग्यालनांग एक आत्मविश्वास से भरी और संपन्न लग रही ओपेरा सिंगर है जो अपने आप में एक सेलेब्रिटी हैं, एक आज़ाद और आत्मविश्वास से लबरेज औरत जो अपना कार खुद चलाती है और अंग्रेजी बोलती है।

यिगा न तो कोई भिक्षुणी है और न ही संत हैं। यिगा की भूमिका नीदरलैंड की तिब्बती स्टार गायिका नामग्याल ने निभाई है और इतने बेहत. रीन तरीके से निभाई है कि ऐसा लगता है कि यह भूमिका पूरी तरह से उनके लिए ही बनी थी। जब वह गाती हैं तो उनकी आवाज में बर्फ से गले पानी जैसी ढंड दिखती है। उन्होंने शुरू से ही पर्दे में आग लगाई है, बर्फ से भरे ऊंचे पहाड़ों और विशाल हरे चारागाहों के सेट को देखकर तत्काल मन तिब्बत के पठार में पहुंच जाता है।

यिगा का चरित्र अविश्वसनीय रूप से खुद नामग्याल ल्हामो के अपने असली जीवन से मिलता है। उन्होंने इसे शांतिपूर्ण गरिमा और बेहद आसानी से निभाया है। रॉक और सम्मोहित कर देने वाले हुक्स जैसे म्युजिक बैंकग्राउंड के साथ उनके गाने अंतर्मन को झंझोड़ देते हैं, जब इस चरित्र को गिरफ्तार किया जाता है, जेल में रखा

जाता है और जेल में ही उसके साथ बर्बरता से बलात्कार किया जाता है।

दुनिया की छत पर प्रताड़ना और भय का सबसे खौफनाक अनुभव किया जा रहा है और दुनिया को इसकी बहुत कम परवाह है और इसके बा. वजूद यिगा कहती है, "आज़ादी का मतलब जेल से भागना नहीं, बल्कि अपने खुद के भय से मुक्ति पाना है।"

'ड्रापची' का वर्ल्ड प्रीमियर नई दिल्ली में २६ जुलाई को हुए एशियाई और अरब सिनेमा के १२वें ओसियन सिनेफैन फेस्टिवल के दौरान हुआ था। अपनी दुर्दशा का इस तरह से यथार्थवादी चित्रण देखकर दर्शक दीर्घा में बैठे तिब्बतियों की आंखें भर आईं। दर्शकों के रूप में आए करीब ३०० तिब्बतियों की तरफ से नई दिल्ली में दलाई लामा के प्रतिनिधि श्री पेम्पा सेरिंग ने फिल्म के निर्माता, निर्देशक और अभिनेत्री नामग्याल ल्हामो को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा, "सत्य को एक आवाज मिल गई है।"

ड्रापची देखने के बाद हम काफी कुछ घर लेकर जाते हैं। यह हमें दिखाता है कि जब तिब्बत के आध्यात्मिक कार्यों में लगे तिब्बतियों पर बंदूकों से हमला किया जाता है और भागने का कोई रास्ता भी न हो तो क्या होता है और वे भगवान बुद्ध के उपदेशों के सामने आने वाली असली चुनौतियों से किस तरह से निपट रहे हैं। कोई व्यक्ति करुणा का प्रदर्शन कैसे कर सकता है, जब दुश्मन ने उसके देश पर कब्जा कर लिया हो, प्रतिरोध करने वालों की हत्याएं कर रहा हो और जेलों की कोठरियों में ठूंसकर लोगों को शांत करना चाहता हो?

तिब्बतियों के स्वाधीनता संघर्ष की अकथ कहानियों के बारे में कई और फिल्में भी बनाई गई हैं, खासकर खम्पा योद्धाओं के बारे में, लेकिन ड्रापची ने हमें पहली तिब्बती 'हीरोइन' यिगा दिया है। पर्दा गिरने के बाद भी वह काफी समय तक आपके दिल-दिमाग पर छायी रहती हैं। 'ड्रापची' को आधिकारिक रूप से १२ से २१ अक्टूबर २०१२ को २८वें वारसा फिल्म समारोह में दिखाने के लिए चयनित किया गया और इसे २७ नवंबर से २ दिसंबर, २०१२ तक ३५वें काहिरा इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में प्रतिस्पध ाि दौर में शामिल किया गया। इस फिल्म को व्यावसायिक तौर पर १० मार्च, २०१३ को रिलीज किया गया।

frCcr% jkbfVax l vkSu fgLVªh ,.M ikWfyfVDl

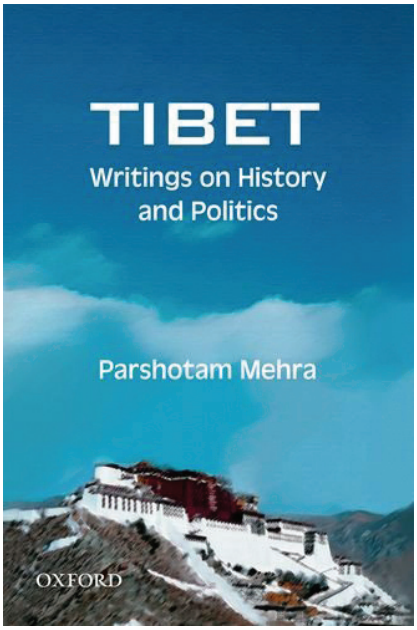

fo kÛkrk,¡

- तिब्बत के संदर्भ में भारत की विदेश नीति पर उपलब्ध बहुत कम पुस्तकों में से एक।

- तिब्बत पर जो लोग मौजूदा बहस में शामिल होने को इच्छुक हैं उन्हें यह जरूर पढ़ना चाहिए

y[kd d ckj e

परषोत्तम मेहरा भारत के पंजाब विश्वविद्यालय में इतिहास एवं मध्य एशिया अध्ययन विभाग के पूर्व अध्यक्ष और प्रोफेसर रहे हैं।

iLrd fooj.k

पेज: ४००

मूल्य: ७६५ रुपए

ij'kkRre egjk

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य से बीसवीं शताब्दी के शुरुआती दौर के व्यापक विद्वता पेश करते हुए यह पुस्तक तिब्बत के इतिहास और राजनीति पर एक नई दृष्टि डालती है। तिब्बत पर मौजूदा विवादों का समाधान करते हुए गहन अकादमिक सावधानी के साथ परषोत्तम मेहरा स्वायत्तता, भारत और दुनिया भर में तिब्बती शरणार्थियों की पीड़ा, मानवाधिकार और तिब्बत को लेकर भारत की भूमिका के मसले पर ध्यान केंद्रित रखने में सफल हुए हैं। वह तिब्बत पर सामयिक सामग्री के साथ ही उसके इतिहास एवं राजनीति के विश्लेषण को भी पेश करते हैं और दलाई लामा एवं पंचेन लामा की संस्था के साथ ही, साम्राज्यवादी चीन, कम्युनिस्ट चीन, भारत के पूर्व ब्रिटिश शासकों और रूस के जार के साथ तिब्बत के रिश्तों का भी परीक्षण करता है। ऐसा करके मेहरा ने मौजूदा समय में तिब्बत पर चल रहे बहसों में कई जटिलताओं का खुलासा किया है।

पुस्तक का यह खंड महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें तिब्बत की संप्रभुता के सवाल और इस विवादित भूमि पर संघर्ष के समाधान संभावित दिशा के बारे में साहसिक तरीके से बात की गई है।